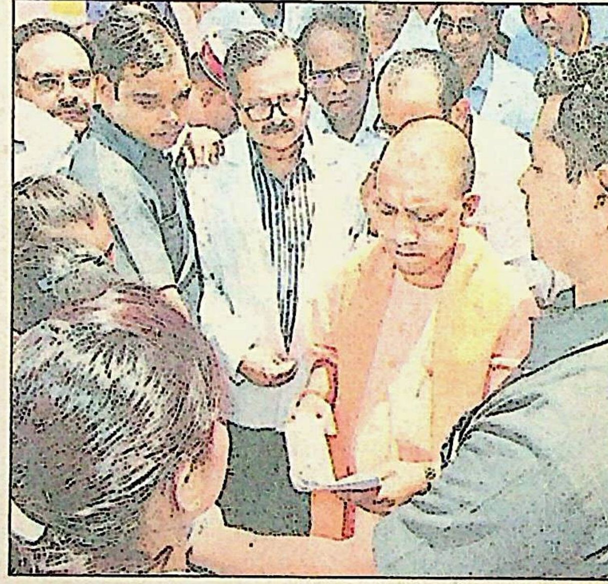
गी पर योगी ने चे

4·3 V2





विंध्यवासिनी मंदिर पहुंचे और दर्शन-पूजन किया (बाएं)। मंडलीय अस्पताल से निकले सीएम को लोगों ने समस्याओं का ज्ञापन दिया

को लगाई फटकार

सीएम अंदर, बाहर मौत

मुख्यमंत्री अस्पताल का निरीक्षण कर रहे थे। इसी दौरान लालगंज के बामी निवासी लालचंद 17 वर्षीय बीमार को लेकर पहुंचे। सीएम के निरीक्षण के कारण वह अंदर नहीं घुस सका। आरोप है कि समय पर उपचार न होने

मरीजों को भेजा जा रहा था वापस

मिर्जापुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दौरे के दौरान मंडलीय अस्पताल में सुबह से ही बंदी जैसा माहौल कायम हो गया था। सीएम के आने से पहले ही अस्पताल आने वाले मरीजों को वापस भेज दिया

विधायक का गनर पहुंचा हेलीपैड तक

मिर्जापुर। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी की सुरक्षा में सेंध लग गई। मुख्यमंत्री को सुबह पुलिस लाइन परेड ग्राउंड में उतरना था। हेलीपैड तक चुनार विधायक का निजी गनर भी पहुंच गया था। सही समय पर अधिकारियों की नजर उस पर पड़ी तो गनर को लौटाया गया। इससे पहले परेड ग्राउंड से चंद दूरी पर स्थित रमईपट्टी तिराहे पर

ड़कों के निर्माण क
जांच के दिये निर्देश

र्जापुर। योगी ने विंध्याचल मण्डल के तीनों जिलों के डीएम को निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना व राजकीय निर्माण निगम से कराए गए कार्यों की जांच कर रिपोर्ट सौंपी जाए। उन्होने कहा कि ...जेंसियों का कार्य बेहद खराब ...ा है। इनकी जांच कर ...की रिपोर्ट सौंपी जाए ताकि ...ई की जा सके। सीएम उस ...य तेवर में नजर आए जब वे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना और राजकीय निर्माण निगम के कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होने दोनों विभागों के अधीक्षण अभियंताओं का परिचय प्राप्त करने के बाद कहा कि सड़कों की गुणवत्ता से खिलवाड़ किया जा रहा है।

पंडा समाज व पुलिस में हुई कहासुनी

विंध्याचल। सीएम योगी के शु... को मां विंध्यवासिनी के दर्श... के ठीक पहले पंडा सम... और पुलिस में कहा... समाज के लोग ... मंदिर से जाने ... मनाया और ... आने ... इस ...

✵ओ३म्✵

वैदिक-प्रार्थना



प्रवर्तना लेखक
श्री १०८ स्वामी वेदानन्द तीर्थ
अध्यक्ष—विरजानन्द वैदिकसंस्थान



लेखक
श्री पण्डित जगत्कुमार शास्त्री

सम्पादक
डॉ. नरेन्द्र कुमार आचार्य

भेंटकर्ता
प्रेमलता गुप्ता
१०६१/१५ फरीदाबाद (हरि०)

प्रकाशक :

तिलकराज आर्य

अध्यक्ष

आर्य प्रकाशन

८१४—कूण्डेवालान

अजमेरी गेट दिल्ली—६

संस्करण—१९९८

मूल्य—२० रुपये

मुद्रक : शुभम् ऑफसैट शाहदरा दिल्ली

ओ३म्

प्रवर्तना

लेखक-पूज्यपाद् श्री १०८ स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महाराज
अध्यक्ष, विरजानन्द वैदिक संस्थान, ज्वालापुर, हरद्वार



सभी प्राणी दुःख से सन्त्रस्त होकर उसके विपरीत सुख की ामना करते हैं, किन्तु संसार में कितने ऐसे भाग्यशाली हैं, जिन्हें ाचमुच सुख मिलता हो? महात्मा जन कहते हैं, जो जो दुःख के साध ान हैं, उनका परित्याग करने से दुःख की निवृत्ति तो अवश्य हो जाती है, किन्तु मनुष्य केवल अभाव-दुःखाभाव की कामना नहीं करता और केवल उस अभाव ही के लिए पुरुषार्थ नहीं करता, प्रत्युत् वह किसी भावात्मक रसीले पदार्थ की कामना और उसकी प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करता है।

वह प्रापणीय रसीला पदार्थ कहां से मिल सकता है? इसके लिये पदार्थों के गुण, धर्म जानने की परमावश्यकता है। संसार पर दृष्टि डालने से सिद्ध होता है कि यह जगत् जड़–चेतन के मेल का खेल है। जो जड़ हैं उन उनमें जड़ता का ज्ञान भावाकार चेतनाशून्यता का कोई तारतम्य नहीं है। हां, चेतनों में अवश्य ज्ञान की घटती-बढ़ती देखी जाती है। कोई महाज्ञानी है और कोई निपट मूर्ख है। निपट मूर्ख में भी ज्ञान का सर्वथा अभाव नहीं है। ज्ञान का सर्वथा अभाव जड़ में है। ज्ञान की घटती होते–होते जैसे जड़ ज्ञान के अभाव की चरम कोटि है, इसी भांति ज्ञान की वृद्धि की भी एक ऐसी कोटि अवश्य होनी चाहिए, और वह है भी, जिसमें अज्ञान का लवलेश भी न हो। दार्शनिक

लोग उसको ही परमेश्वर कहते हैं। वह ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण सर्वज्ञ है। उससे कुछ भी अज्ञात नहीं हैं। जहां अज्ञान नहीं, वहां दुःख भी नहीं और ज्ञान होने से वहां आनन्द भी है। सर्वज्ञ होने के कारण वह सर्वव्यापक एवम् आनन्दघन है। इस प्रकार विचार करने से ज्ञात हुआ कि प्रकृति तथा तज्जन्य पदार्थ चेतनशून्य अतएव आनन्दरहित हैं। चेतन जीवों में उनके ज्ञान के अनुपात से ही उन्हें सुख की प्रतीति होती है। ज्ञान की पराकाष्ठामय भगवान में ज्ञान के साथ ही आनन्द की भी चरम सीमा है। उससे बढ़ कर आनन्द कहीं नहीं है। जीव को आनन्द की कामना है। इस अनुसन्धानजन्य स्तुति से भान हुआ कि वह भगवान में है। अतः जिसे आनन्द लेना हो, वह भगवान से अपना सम्बन्ध बनाए।

ईश्वर से सम्बन्ध बनाने का एक साधन है स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना। किसी के यथार्थ गुण वर्णन का नाम स्तुति है। स्तुति से अपनी न्यूनता, अपनी अपेक्षित वस्तु तथा उसके केन्द्र का ज्ञान होता है। उसकी प्राप्ति के लिये उत्कट कामना को प्रार्थना कहते हैं। स्तुति से हमें भान हुआ कि हमारा अभीष्ट भगवान् से हमें मिल सकता है, अतः पूर्ण व्यग्रता से उसके लिए यत्न पूर्वक कामना तथा कामनापूर्वक पूर्ण पुरुषार्थ का नाम प्रार्थना है। प्रार्थना के पश्चात् अभीष्ट के केन्द्र के पास बैठने का नाम उपासना है।

वेद में शतशः मन्त्र स्तुति, प्रार्थना आदि के सम्बन्ध में हैं । श्री पं० जगत्कुमार जी ने उनमें से बत्तीस मंत्रों का संकलन करके शब्दार्थ एवम् प्रार्थना से संवलित कर दिया है। प्रत्येक नर–नारी को इस संग्रह से लाभ उठाना चाहिए।

—वेदानन्द तीर्थ

पुस्तक-परिचय

१– इस पुस्तक में बत्तीस प्रार्थनाओं का संग्रह है। प्रत्येक प्रार्थना का मुख्य आधार एक वेद–मन्त्र है, जोकि प्रत्येक प्रार्थना के आरम्भ में शब्दार्थ सहित लिख दिया गया है। आस्तिक भाइयों और बहिनों के उपासना–कार्य के लिये तो यह पुस्तक उपयोगी है ही, इसके साथ ही विद्यार्थियों की धार्मिक शिक्षा के लिये भी यह विशेष उपयोगी है। पारिवारिक और सामाजिक उपासनाओं में पाठ के लिये भी यह उत्तम है।

२– अच्छा यह होगा कि पाठक प्रार्थना–मन्त्रों को अर्थ सहित कण्ठस्थ कर लें। ऐसा करने पर इन प्रार्थनाओं के पाठ में विशेष आनन्द प्राप्त होगा और धीरे–धीरे पुस्तक की सहायता के बिना ही प्रार्थना करने का उत्तम अभ्यास भी हो जायेगा।

३– जो उपासक व्यक्तिगत उपासना में इस पुस्तक का उपयोग करें, उनको उचित है कि प्रतिदिन प्रातःकाल की सन्ध्या के पश्चात् मनोयोग पूर्वक एक–एक प्रार्थना का पाठ किया करें। इस प्रकार एक मास में तीस प्रार्थनाओं का पारायण पूर्ण होगा और आगामी मास में फिर आरम्भ से ही पाठ आरम्भ हो जायेगा। इस प्रकार पाठ और अभ्यास करने से उपासक का मन उपासना में दृढ़ हो जायेगा और उसका जीवन भी उत्तरोत्तर उन्नत, शान्त और आनन्दी होता जायेगा। अन्त की दो प्रार्थनायें तो जागने और सोने के समय की हैं।

४– पूज्यपाद् श्री १०८ स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके 'वैदिक–प्रार्थना' की पाण्डुलिपि को आद्योपान्त पढ़ा, सुधारा, प्रवर्तना लिखने का अनुग्रह किया, और अपने समर्थन द्वारा इसके प्रकाशन के लिये मुझे उत्साहित भी किया, मैं हृदय से श्रद्धेय स्वामीजी का धन्यवाद करता हूँ।

२६-१-५१ —जगत्कुमार शास्त्री

आर्ष-व्यवस्था

प्रश्न - परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये वा नहीं?

उत्तर - करनी चाहिये।

प्रश्न - क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति आदि करने वाले का पाप छुड़ा देगा?

उत्तर - नहीं।

प्रश्न - तो फिर स्तुति प्रार्थना क्यों करना?

उत्तर - उनके करने का फल अन्य ही है।

प्रश्न - क्या है?

उत्तर - स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानिता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

—महर्षि दयानन्द
(सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास)

आत्म-निवेदन

हे सब जगत् के उत्पादक ! हे सर्वशक्तिमन् परमेश्वर ! हे घट–घट के वासिन् ! हे सबके पालन–पोषक–देव ! मेरी वाणी में इतनी शक्ति नहीं है, जो आपकी महिमा का वर्णन कर सके। मेरी लेखनी में इतना सामर्थ्य नहीं है, जो आपके गुणों का उल्लेख करे। आपकी महिमा अपार है। आपके गुण, कर्म और स्वभाव अनन्त हैं। बड़े–बड़े ऋषियों–मुनियों ने आपकी महिमा का बखान करने का यत्न किया, परन्तु अंत में उनको भी कहना पड़ा– 'नेति–नेति। अर्थात् वह प्रभु, इतना भी नहीं है। वह तो इससे बहुत अधिक है। अनन्त है, असीम है, बड़े से बड़ा है और छोटे से छोटा है।

तब, हे प्रभु ! मैं बेचारा किस गिनती में हूं ? दयामय ! मैं जानता हूं, मेरी सामर्थ्य बहुत ही थोड़ी है, फिर भी दो चार शब्द लिखने का साहस मैं आज कर रहा हूं। मैं आपकी कुछ विशेष स्तुति कर सकूंगा, इसकी तो आशा अधिक नहीं है। हां, यह मेरा 'आत्म–निवेदन' है। हे दीनानाथ ! इसे स्वीकार करना।

हे दाता ! आपकी ही कल्याणी वेद–वाणी के सहारे–सहारे, समय–समय पर, मैं, मौखिकरूप में जो–जो भी अरदास, आपसे करता रहा हूँ, वही यह, आज लिखितरूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत है। आशा है, आप इसे स्वीकार करेंगे।

पिताजी ! यदि इसमें कोई त्रुटि हो, तो उसे क्षमा कर देना। मैं तो आपका अबोध बालक हूं। विद्या का मुझे कोई भी अभिमान नहीं है। आपका प्रेम ही मुझे इस मार्ग में खींच लाया है।

हे जगत्–नियन्ता ! जो इस पुस्तक को पढ़ें, उनका कल्याण करना। जो इस पुस्तक को सुनें, उनका भी कल्याण करना। उनके मन–मन्दिर में अपने दिव्य–प्रकाश की ज्योति जगा देना। हे प्रभो ! सब नर–नारी आपके भक्त हों। उत्तम आचार और विचार से युक्त हों।

हे परमात्म देव ! आपकी कृपा से हमारे मन में सुख और शान्ति हो। हमारे नगरों में और हमारे देश में, सुख और शान्ति हो। अखिल भू–मण्डल में सुख और शान्ति हो। सब लोक लोकान्तरों में सुख और शान्ति हो।

–जगत्कुमार शास्त्री



सुरुचि गुप्ता

(जन्म ८ जुलाई १९७३ मृत्यु २० सितम्बर १९८७)

कर्म के रहस्य को अल्पायु में ही
रग रग में बसा लेने वाली
प्रिय पुत्री की स्नेहिल याद में।

गीता में श्री श्रीकृष्ण ने कहा है
'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।'

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

'भाग्य पर विश्वास करना चाहिए अथवा कर्म पर।" इस विषय पर लेख लिखिए :

अनादि-काल से भाग्य तथा कर्म के महत्व पर वाद-विवाद होता आया है। भाग्य और कर्म सदा ही परस्पर प्रतिद्वंद्वी रहे हैं। किसी विद्वान ने अपना अभिमत भाग्य के पक्ष में दिया तो किसी ने विपक्ष में, परन्तु यह तथ्य सर्वथा बहुमत रहा है कि कर्म ही मानव जीवन का आधार है, भाग्य नहीं। भारतीय दर्शन ने भी कर्म की महत्ता प्रतिपादित की है। कहा गया है, 'वीर भोग्या वसुन्धरा।' अर्थात एक कर्मठ व्यक्ति ही पृथ्वी के सारे गुणों को भोग सकता है। सुख-लोलुप होने के लिए कर्मण्यता आवश्यक है। जो व्यक्ति भाग्य पर निर्भर रहता है, वह निष्क्रिय हो जाता है। निश्चेष्ट होकर कोई कार्य न करना अवनति का प्रतीक है। यदि मनुष्य भाग्य पर निर्भर होता तो आधुनिक काल की कोई भी सुविधाएं ~~भी सुविधा~~ हमें प्राप्त न होती। न ही वास्तुकला के अनुपम उदाहरण होते, न ही पाक-कला के स्वादिष्ट व्यंजनों का हम आस्वादन कर पाते, न ही किसी और क्षेत्र में मनुष्य की भौतिक उन्नति होती। यदि मनुष्य में अन्वेषण की आतुरता पर भाग्य का विश्वास विजय पा जाता, तो आज भी अन्तरिक्ष के, इस धरा के, यहाँ तक की हर जीव-जन्तु एवं कीटाणु के अनेक रहस्य तिमिर-परिपूर्ण रहते। बहुत से भारतीय भाग्य पर विश्वास करते हैं लेकिन पवित्र गीता जो कि भारतीयों को अनुप्राणित करती रही है, इसमें भी कृष्ण ने अर्जुन को कर्म करने की शिक्षा दी है। कर्म के साथ ही मनुष्य को भाग्य पर विश्वास करना चाहिए। श्रीकृष्ण ने भी कहा था।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

THERE ARE SO MANY WHO ARE GOOD IN SPORTS, MUSIC, F. ARTS, QUIZZING AND WHAT NOT. AT LEAST I SHOULD BE THE LEADER IN ONE FIELD. IT HAS GOT TO BE ACADEMICS SINCE I AM ZERO IN SPORTS, A VERY LITTLE IN ARTS AND SOMETHING IN MUSIC. IN QUIZ I AM JUST OKAY. SO It has got to be STUDIES. Yes, STUDIES! STUDIES! STUDIES!

ओ३म्

वैदिक-प्रार्थना

(१)

हम आपके हैं, आप हमारे

**त्वया इदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः।
त्वमस्माकं तव स्मसि।।**

ऋ० ८। ६२। ३२

इन्द्र -	हे देवाधिदेव ! हे सर्वैश्वर्यसम्पन्न !	**युजा इत्**	- युक्त होकर ही
वयम् -	हम	**प्रति ब्रुवीमहि**	- दूर करें, प्रतिकार करें।
स्पृधः -	युद्धों, जीवन के संघर्षों एवं स्पर्धाओं को, का	**त्वम्**	- तू
		अस्माकम्	- हमारा है।
त्वया -	आपसे	**तव स्मसि**	- हम तेरे हैं।

हे इन्द्र ! तुझसे युक्त होकर, ईश्वरीय–दिव्य लक्षणों से युक्त होकर ही, हम प्रत्येक परिस्थिति का सामना करें। आप हमारे हैं। हम आपके हैं।

हे सर्वैश्वर्यसम्पन्न हे ! सर्वनियन्ता ! हे देवाधिदेव ! हम पर ऐसी कृपा करो, जिससे हम सदा ही आपके साथ–साथ बने रहें। आपसे हमारा सम्बन्ध–विच्छेद कभी भी न हो। हे देव ! तात्त्विक रूप में तो हम कभी भी आपसे दूर नहीं हो सकते। परन्तु जब हम सांसारिक मोह–माया में लिप्त होकर आपको भूल जाते हैं, अथवा जब अज्ञानवश हम नाना प्रकार के भोगविलास में फंस जाते हैं, तो यह हमारी आपसे दूरी ही तो है। जब हम मिथ्याचारी बनकर नास्तिकों के-से आचरण करने लगते हैं, तब वह हमारे आपसे दूर–दूर रहने का ही तो परिणाम होता है। अज्ञान की दूरी भी तो दूरी ही है। इसलिये हे प्रभो ! आप सदा ही हमारे साथ बने रहें। आस्तिकभाव की ज्योति सदा ही हमारे मन–मन्दिर को आलोकित करती रहे। हमें तो पग–पग पर आपके पथ–प्रर्दशन की आवश्यकता है।

दयामय ! अनेक अवसर ऐसे आ जाते हैं, जबकि हमारे मन में स्पर्धा के भाव उठ खड़े होते हैं। मान–मर्यादा का प्रश्न उपस्थित होता है। हमारा अस्तित्व खतरै में पड़ जाता है। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन पर चोट होती है, अथवा हमारी धार्मिक और आत्मिक उन्नति के मार्ग में बाधायें आ खड़ी होती हैं। बाजी लग जाती है। तन, मन, धन की बाजी लग जाती है। जीवन की बाजी लग जाती है। हे दीनबन्धो ! ऐसे अवसरों पर हम और किसे पुकारें? आपके द्वार को छोड़कर सहायता के लिये और कहां जायें? हम तो आपके ही आश्रित होकर जीवित हैं। हम, जो कभी–कभी किसी से कुछ करारे–करारे प्रश्न–उत्तर कर लेते हैं, यह सब आपकी कृपा का ही तो फल है। हम आपके ध ान को पाकर ही धनी बने हैं। आपके बल को पाकर ही बलवान हुए हैं। हमारा मान–सम्मान आपकी ही तो देन है।

हे परमात्मन् ! जब–जब हम पर भीड़ पड़े, हमारी रक्षा करो।

आपकी कृपा से हम सब प्रकार के पाप–ताप से बचे रहें। सुरक्षित रहें। आपकी कृपा से हमारा कभी भी, किसी भी प्रकार का पतन न हो। आपकी कृपा से हम सदा आगे बढ़ें। ऊपर ही ऊपर उठते चलें जायें।

आप हमारे हैं, हम आपके हैं।

आप हमारे हैं, हम आपके।



(२)
आपको हमारा नमस्कार



सख्य त इन्द्र वाजिनो, मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो, जेतारमपराजितम्।।

ऋ० १। ११। २

शवसः पते - हे सर्वशक्तिमन्! हे बलवानों के भी स्वामिन्!

इन्द्र—हे सर्वोपरि शासक!

ते—तेरी

सख्ये—मित्रता में

वाजिनः—हम सदा ही बलवान् बने रहें और

मा भेम—कभी भी किसी भी प्रकार का भय न करें।

जेतारम —हम सदा ही सबको जीतने वाले और

अपराजितम् —कभी भी किसी से भी पराजित न होने वाले उपासक

त्वाम् —तुझको

अभि —सर्वथा

प्रणोनुमः —प्रणाम करें, श्रद्धा भक्ति पूर्वक नमस्कार करें।

हे बलों के भण्डार! आपकी मित्रता को पाकर हम सदा ही

बलवान बने रहें। कभी भी किसी से न डरें। प्रभो ! हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं। आपकी कृपा से हमको सदैव विजय मिले, पराजय कभी नहीं।

हे इन्द्र ! जब आप हमारे मित्र हैं, तब हमें किसी का क्या डर है? जो सत्य है, वही हम कहेंगे और जो उचित है, वही हम करेगें। हम किसी से क्यों डरें? और क्यों दबें? हे सर्वशक्तिमन् भगवन् ! आपको अपने मित्र के रूप में पाकर अब हम सब प्रकार से निश्चिन्त हो गये हैं। हमें कोई डर नहीं है। चिन्ता नहीं है। शोक नहीं है। और हे अन्तर्यामिन् ! संशय या दुविधा भी हमें नहीं है। अब तो हम रात–दिन यही मनाते हैं कि आपसे हमारी प्रीति बढ़ती जाये। निरन्तर गहरी होती चली जाये। आप तो हमारे सनातन मित्र हैं ही, हम भी आपके मित्र बने रहें। मित्र–धर्म का निर्वाह करने की हमारी क्षमता बनी रहे।

हम जैसे मनुष्यों से, और यही क्यों, प्राणी मात्र के प्रति आपका मित्र–भाव है। यह मित्र–भाव आपकी बड़ाई और उदारता का ही परिचायक है। नहीं तो कहां आप और कहां हम? आप सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वजगदुत्पादक, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और अनन्त गुण, कर्म एवं स्वभाव युक्त, अभय, ब्रह्म हो और हम अल्प शक्तिमान्, अल्पज्ञ, एकदेशी जीव, आपके द्वार के पुराने भिक्षुक, आपके ज्ञान के जिज्ञासु और आपके आनन्दामृत के प्यासे। फिर भी हमारे प्रति आपका असीम स्नेह, मित्र भाव, वास्तव में यह आपकी उदारता है। एक कण को ज्योतिःपुंज बनाना, एक जल की बूंद को महानदी के रूप में प्रवाहित कर देना, यह आपकी महिमा का ही तो चमत्कार है। इसलिये हे देव ! आप हमारे मित्र भी हैं और श्रद्धा–भाजन भी।

संसार के कुछ स्त्री–पुरुष हमारी आपकी मित्रता में बाधा देने वाले प्रयास जब–तब करते ही रहते हैं। कोई हमें प्रलोभनों में फंसा

लेना चाहता है और कोई अन्याय पूर्वक दबाना। कोई चाहता है कि हम आपको अपना प्रातः और सायंकाल का 'नमो नारायण' निवेदन करना छोड़ दें और कामी, कपटी, दम्भी, धूर्त, पाखण्डी, अत्याचारी, अन्यायकारी जनों के चरणों में सिर झुकाया करें। अनुचित आज्ञाओं का पालन किया करें। परन्तु मित्रवर ! हम तो ऐसा करेंगे नहीं। कर सकते नहीं। हमारे नमस्कार तो केवल आपके लिये हैं। हां, हां, केवल आपके ही लिये।

हे प्रभो ! आपकी कृपा से शुभ कार्यों में हमारी रुचि निरन्तर बढ़ती रहे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारी विजय हो। हमें कभी पराजय का मुख न देखना पड़े।

(३)

आपके ही गीत आपका ही यज्ञं



गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यकर्मर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो, उद्वंशमिव येमिरे।।

ऋ० १। १०। १

हे प्रभो !

गायत्रिणः—गायक लोग
त्वा—तेरी महिमा के गीत
गायन्ति—गाते हैं।
अर्किणः—जब, तप और यज्ञ याग आदि करने वाले
अर्कम्—तुझ पूजनीय की।
अर्चन्ति—अर्चना, स्तुति, प्रार्थना और उपासना कर रहें हैं।

शतक्रतो—हे अनन्तोपकार कारक भगवन् !
ब्रह्माणः—आपके भक्त ज्ञानी लोग
त्वा—आपकी पवित्र सत्ता को
वंशम् इव—झण्डे के बांस के समान
उत्—ऊपर ही ऊपर, श्रेष्ठ और उच्चतर
येमिरे—निश्चित करते हैं, वर्णन करते हैं,

गायक लोग आपकी महिमा के गीत गा रहे हैं। याज्ञिक लोग

नाना प्रकार के यज्ञों द्वारा आपका पूजन और अर्चन कर रहे हैं। ब्राह्मण आपके पवित्र नाम को, आपकी पवित्र सत्ता और महत्ता को, विजय–पताका के समान उठाये–उठाये चल रहे हैं।

हे चराचर जगत् के उत्पादक, पालन और पोषक प्रभो ! गायक तेरी महिमा के गीत गा रहे हैं। वायु की सरसराहट, झरने की कल–कल ध्वनि, बादल की गड़–गड़ाहट, वर्षा की रिम–झिम रिम–झिम, बिंजली की कड़क, मोर की केका–ध्वनि, पक्षियों के चहचहे, शेर की दहाड़ और हाथी की चिंघाड़, ये सब तेरी महिमा के गीत ही तो हैं। कवि के गीतों का विषय तू है। ऋषि मुनि, ज्ञानी ध्यानी, सन्त महात्मा, सभी, एक स्वर में गा रहे हैं... तू है। तू है। तू है। तू ही तू। तू ही तू। तू ही तू।

हे निरन्तर क्रिया शक्ति के अतुलभंडार ! सर्वाधार प्रभो ! कर्मयोगी लोग तेरी ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना कर रहे हैं। अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, उन्होंने एक मात्र तुझे ही अपना लक्ष्य बना रखा है। योगी लोग समाधि के द्वारा तुझे पाना चाहते हैं। ज्ञानी ज्ञान–योग के द्वारा तुझे पाना चाहते हैं। वीर क्षत्रिय युद्ध क्षेत्र में मर कर अथवा मार कर, तुझे पाना चाहते हैं। व्यापारी भी तुझे स्मरण करते हैं। मनुष्यता तुझ सच्चे स्वामी की ओर प्रेरती है। तेरी आराधना से सबने अपने जीवन को पवित्र, पवित्रतर तथा पवित्रतम बनाया है। साधकों ने अपने सम्पूर्ण जीवन–व्यापार और कार्यकलाप को तेरे ही यज्ञ–याग, जप–तप और संध्या-पूजा का रूप दे डाला है।

हे सर्वत्र विद्यमान महान् से महान् भगवन ! ज्ञानी लोग तेरे पवित्र नाम का झण्डा उठाये–उठाये घूम रहे हैं। तेरे ही नाम की अलख जगाते फिरते हैं। तेरे ही नाम की महिमा गाते फिर रहे हैं। तेरे ही नाम के जय–जयकार करते विचर रहे हैं। तेरे पवित्र नाम, तेरी पवित्र सत्ता

और तेरी पवित्र महत्ता को उन्होंने अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान दे रखा है।

हे दयानिधे ! हमें भी ऐसा बल और ऐसी शक्ति प्रदान करो, जिससे हम भी तेरी महिमा के गीत गा सकें। हमारा जीवन शुद्ध और शान्त हो। यज्ञ कर्मों का अनुष्ठान और तेरी स्तुति प्रार्थनोपासना करते हुए हमारा जीवन सफल हो जाये। तेरे पवित्र नाम को अपनी जीवन नैया का चप्पू बनाकर हम संसार सागर से पार हो जायें। तेरे पवित्र नाम की पताका को फहराते हुए, हम अपने जीवन–संग्राम में पूर्ण–विजय प्राप्त कर सकें।

(४)

मैं मधुमय बन जाऊं



मधुमन्मे निक्रमणं, मधुमन्मे परायणम्
वाचा वदामि मधुमद्, भूयासं मधु सन्दृश।

अथर्व० १। ३४।

हे प्रभो !
मे-मेरा
निक्रमणम्-निवृत्ति
मधुमत्-मधुर हो।
मे-मेरी
परायणम्-प्रवृत्ति भी
मधुमत्-मधुर हो।

वाचा-वाणी से मैं
मधुमत्-मधुरता, युक्त शब्द
वदामि-बोलूं, बोलता हूं।
आपकी कृपा से मैं
मधुसन्दृशः-शहद जैसा,
साक्षात् माधुर्य
भूयासम्-बन जाऊं।

सांसारिक कार्यों से मेरी निवृत्ति मधुर हो।
सांसारिक कार्यों में मेरी प्रवृत्ति मधुर हो।
वाणी से में सदैव मीठा–मीठा ही बोलूं।
मैं साक्षात् शहद जैसा मधुमय बन जाऊं।

हे परमात्म देव ! आपकी कृपा से मेरी कार्य निवृत्ति माधुर्य से क्त हो। और जीवन से निवृति भी माधुर्य से युक्त हो। जब मैं अल्प मय के लिये विश्राम लूं, जब मैं दीर्घ समय के लिये विश्राम ग्रहण रूं तथा जब मैं अपने कर्तव्यों को पूर्ण कर चुकुं तब कोई भी चिन्ता, था, पछतावा अथवा अपूर्ण–अभिलाषा मेरे ह्वदय में शेष न रहे। कोई ग्रता वा कड़वाहट शेष न रह जाये।

हे भगवन् ! आपकी कृपा से मेरी कार्य में प्रवृत्ति भी माधुर्य से क्त हो। मैं बुरे भावों को धारण न करूं। बुरे कार्यों का आचरण न रूं। दुष्ट मनोरथों को लेकर किसी भी कार्य में प्रवृत्त न होऊं। अपने धनों तथा अपनी योग्यता का सदुपयोग करते हुए, मैं निरन्तर पकी दया और कृपा का पात्र बना रहूं।

हे प्रभो ! मेरी वाणी सत्य और माधुर्य से युक्त हो। आपकी ल्याणी वेद–वाणी का पठन–पाठन, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, क्षात्कार और उपदेश करने की मेरी माधुर्यमय–सामर्थ्य उत्तरोत्तर ढ़ती रहे। मेरी इन्द्रियां, इन्द्रियों की शक्तियां, एवम् इन्द्रियों की म्पूर्ण चेष्टायें, माधुर्य से युक्त हों। मेरी स्मृतियां माधुर्य से युक्त हों। कल्प और विकल्प मधुर हों।

हे दयानिधे ! मेरा जीवन शुद्ध, पवित्र, उन्नत और पूर्ण–स्वस्थ । मेरा व्यक्तित्व आकर्षक, स्निग्ध, सौम्य और मधुर हो। मेरे न्तःकरण में राग और द्वेष की भट्टी न जले। काम और क्रोध के ंडर मेरे अन्तस्तल में न उठें। अहंकार और प्रलोभन मुझे पथ भ्रष्ट करें।

हे भगवान् ! आपके प्रेमी, आस्तिक पुरुषों और परोपकारी हात्माओं की संगति में रहकर, मैं उत्साहपूर्वक अपने कर्तव्यों का लन कर सकूं। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझते हुए, अपने

जीवन को सफल बना सकूं। जीवन के चरम–लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं।

हे दीनानाथ ! मुझे मधुरता प्रदान करो। सत्यता प्रदान करो। निर्दोषता प्रदान करो। निर्भयता प्रदान करो। हे देवों के देव ! हे सब के स्वामिन् ! हे घट–घट के वासिन् ! मुझे मोक्ष प्रदान करो। मधुर बना दो। मधुमय बना दो। हे मेरे प्रियतम ! मैं तुझ सा बन जाऊं। हे मधुमय ! मैं भी मधुमय बन जाऊं।

(५)

आपकी कृपा से हम जीते



वयं जयेम त्वया युजा, वृत-
मस्माकमंशमुदवा भरे भरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगंकृधि,
प्रशत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज।।

ऋ० १। १०२। ४

मघवन्—हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामिन्!
त्वया युजा—तुझसे युक्त होकर
वृतम्—शत्रुओं से घिर जाने पर भी
वयम्—हम लोग
जयेम—विजय प्राप्त करें।
भरे भरे—प्रत्येक युद्ध में
अस्माकम्—हमारा
अंशम्—पक्ष
आ उत् अव-सब प्रकार से सुरक्षित हो, उत्तम रहे।
अस्मभ्यम्—हमारे लिये
वरिवः—अन्न और धन की प्राप्ति को
सुगं कृधि—सुगम कर दो और
शत्रूणाम्—शत्रुओं के
वृष्ण्या—सेना आदि बल को
प्र रुज—चकनाचूर कर दो।

आपसे युक्त होकर हम सदा ही विजय प्राप्त करें। शत्रुओं घिर जाने पर भी हम भयभीत न हों। हमारा पक्ष सदा सबल बना र प्रभो ! आवश्यक जीवन सामग्री के प्राप्त करने के मार्ग हमारे लि सरल कर दो। जो सत्यता और सात्विकता के शत्रु हैं, उनका सब ब नष्ट हो जाये।

हे दयानिधे ! आपकी कृपा से हमारी विजय हो। जब जीव संघर्ष में अनेक प्रकार की कठिनाइयां हमारे सामने आयें, जब ना प्रकार की विभीषिकायें हमें कर्तव्य–पथ से विचलित करना चाहें, विविध प्रकार के प्रलोभन हमें पाप–पंक में लिप्त करना चाहें, तब, करुणासागर ! आपकी कृपा से हमारी विजय हो। कोई अभाव हमें सताये। कोई डर हमें न डराये। कोई प्रलोभन हमें न फंसाये। अवस्थाओं में, सब स्थानों में और सब कालों में, आपका नाम लेक आपको निज अंग–संग जानते और मानते हुए, आपकी कृपा अ सहायता से, हम आगे ही आगे बढ़ें। ऊपर ही ऊपर उठें। आप कृपावृष्टि हम पर सदा होती रहे। हे सब प्रकार के ऐश्वर्य के स्वामि ! हम कभी भी आपसे वियुक्त न हों। विमुख न हों। अविद्या और अ ाकार में फंसकर हम कभी भी आपको न भूलें। हम कभी भी आप सर्वोपरिसत्ता और महत्ता का निरादर न करें।

हे प्रभो ! आत्मरक्षा के लिये, देशरक्षा के लिये, धर्मरक्षा के लि गौ और ब्राह्मण की रक्षा के लिये, अपने जातीय गौर और स्वत्वों रक्षा के लिये, लोहे से लोहा बजाने, मरने और मारने, अपना सर्व बलिदान कर देने के अतिरिक्त, जब और कोई भी मार्ग हमारे सा शेष न रहे, तब, हे प्रभो ! हमें बल दो, हम आपका नाम लेकर उठें पूर्ण विजय प्राप्त होने तक अपने धर्मयुद्ध को जारी रखें। हे प्रभो ! युद्धों में विजय हमारी हों। आपकी कृपा से न तो हम किसी

अत्याचार करें और न ही किसी के अत्याचारों को सहन करें।

हे न्यायकारिन् देव ! आपकी कृपा से अन्न और धन, हमें आवश्यकतानुसार प्राप्त होता रहे। अन्न–संकट और धन–संकट हमें, हमारे देश और हमारी जाति को कभी पीड़ित न करें। जो उत्तमोत्तम ऐश्वर्य और भोग्य पदार्थ हैं, वे बाहुलता तथा सुगमता से हमें मिलते रहें। आपकी कृपा से किसी को भी पेट के लिये अपराधी–जीवन का आश्रय न लेना पड़े।

हे सब शक्तियों के भण्डार ! हे बलों के दाता ! हमें बल दो। बल दो। हे भगवन् ! हमें बल दो। जिससे हम अपने व्यक्तिगत–जीवन, अपने आध्यात्मिक जीवन, अपने सामाजिक– जीवन एवं अपने देश और जाति के जीवन के सब शत्रुओं को भली प्रकार पराभूत कर सकें।

(६)

हम किसी से न डरें, कोई हम से न डरे



यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

यजु० ३६। २२

हे प्रभो ! तू
यतः यतः-जहां—जहां भी
सम् ईहसे-चेष्टा करता है,
वहां—वहां ही
नः-हमें
अभयम्-अभय
कुरु-कर।
प्रजाभ्यः-जनता, सन्तान, नौकर चाकर और अनुयायीवर्ग के लिये
नः-हमको
शम्-कल्याण कारक तथा
अभयम्-भय रहित
कुरु-कर।
पशुभ्यः-पशुवर्ग के लिये भी

भय राहत और कल्याण कर। तथा प्रजावर्ग और पशुओं को भी हमारे लिये कल्याण कारक और भय रहित कर।

आप जहां–जहां भी हैं, वहां–वहां ही हमें भय, शंका और लज्जा से रहित कर दो। अखिल प्रजाओं को हमसे भय रहित कर दो। पशुओं को हमसे भय रहित कर दो और हे सर्वव्यापक ! हम सब परस्पर भय–रहित एवं कर्तव्य–परायण होकर रहें।

हे परमात्मन् ! बहुत से अवसरों पर हम भयभीत हो जाते हैं। कभी हम किसी दृश्य को देखकर भयभीत हो जाते हैं, कभी किसी विशेष बात को सुनकर। कभी हम अपने कर्मों के फल से भयभीत हो जाते हैं और कभी शत्रुओं की ललकार सुनकर। कभी सांप, बिच्छू सिंह आदि हिंसक जीव–जन्तु हमें भयभीत करते हैं, बहते हुए नदी–नद और अथाह जलों से परिपूर्ण समुद्र हमें डरावने प्रतीत होते हैं। निर्जन जंगलों और पहाड़ों में जाते हुए हमें डर लगता है। हे दीनबन्धो ! हमारी रक्षा करो। हमारी सहायता करो। कहीं भी, और कोई भी, भय हमें भयभीत न करे। आपकी कृपा से हमारा जीवन शुद्ध और सात्विक हो। हमारा आचरण धर्म के अनुकूल हो। हमारा ज्ञान, पूर्ण और निर्मल हो। न हम किसी से डरें और न कोई हमसे। डरने का कोई कारण ही कभी उपस्थित न हो।

आपकी कृपा से हमारी इन्द्रियां नीरोग और शक्ति सम्पन्न हों। हमारी सन्तान सबल और उत्तम आचरण से युक्त हो। हमारे देश के निवासी ऋद्धि–सिद्धि से परिपूर्ण, कर्तव्य–परायण, दिव्य–विचारों से युक्त, स्वार्थत्यागी, परोपकारी और सच्चे ईश्वर–भक्त हों। हमारा प्रजावर्ग और हम, सबके लिये, तथा सब हमारे लिये, कल्याणकारी हों। हे प्रभो ! हमें ऐसा वर प्रदान करो, जिससे आपकी छत्र–छाया में रहते हुए, हम सब अपने–अपने कर्तव्यों का भली प्रकार पालन करें। और संसार के सुख–समुदाय में कुछ वृद्धि कर सकें। संसार की भद्र–स्थिति को और भी अधिकाधिक भद्र बना सकें।

हे कृपानिधान ! हमारे पशुवर्ग में सुख–शान्ति और निर्भयता हो। हमारे पर्यवेक्षक–वर्ग में सुख–शांति और निर्भयता हो। हमारे सूक्ष्मदर्शी विद्वानों की वैज्ञानिकों में सुख, शांति और निर्भयता हो। हे दीनानाथ ! हमारे सब भय–संकट दूर कर दो। हमारे सब पाप–ताप का नाश कर दो। हे मंगलमय ! हमारा मंगल करो। हे प्रकाशस्वरूप ! हमें प्रकाश दो। हे ज्ञानविज्ञानस्वरूप ! हमें ज्ञान और विज्ञान युक्त करो। आपकी कृपा से संसार के सभी प्राणी निर्भय होकर रहें और विचरें। हम किसी से न डरें। कोई हमसे न डरें। अखिल विश्व एक अखण्ड, निर्भय–परिवार के रूप में परिणत हो जाये।

(७)

प्रियतम ! तेरा नियम अटल है



यदङ्गदाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
त्वेत्तत् सत्यमङ्गिरः।।

ऋ० १। १। ६

अङ्गिरः-हे हमारे अंग–प्रत्यंग में रहने वाले अन्तर्यामी भगवन् !
अङ्गः-हे प्यारे प्रभो !
अग्ने-हे प्रकाशकों के भी प्रकाशक देव !
यत्-जो आप
दाशुषे-दान देने वाले और त्याग का संकल्प करने वाले लोगों का
भद्रम्-कल्याण
करिष्यसि-किया करते हो
तत्-यह तो
तव-आपका
सत्यम्-अटल नियम
इत्-ही है।

हे प्यारे अग्ने ! त्यागशील जनों का आप सदा ही कल्याण साधन किया करते हैं, प्रियतम ! तेरा नियम अटल है।

धन्य है, हे प्रभो ! तुझे और तेरी महिमा को। तेरे रंग निराले हैं। तेरे ढंग निराले हैं। तेरी महिमा अपरम्पार है। दानी लोग दान कर रहे हैं। यजमान यज्ञों का अनुष्ठान। वीरों में आत्म–बलिदान की होड़–सी लग रही है। कोई देश, धर्म और जाति के लिये आत्म-बलिदान कर

रहा है। कोई दरिद्रनारायण की सेवा कर रहा है। कोई रोग–पीड़ित वर्ग की सेवा में संलग्न है, और कोई शोकाकुल समुदाय को आश्वासन देने में मग्न। दाता दान कर रहे हैं और आप दाता की दान–सामग्री की वृद्धि। मानो दाता के दान को बहुत–बहुत, अधिक–अधिक करके लौटा रहे हैं। मूर्खों की दृष्टि में दाता लोग अपने अन्न और धन को गंवा रहे हैं, परन्तु आपकी अटल व्यवस्था के अनुसार वे गंवा कुछ भी नहीं रहे। जो कुछ दे रहे हैं, उससे बहुत अधिक पा रहे हैं। देते जाते हैं। पाते जाते हैं। दान देने वालों और त्याग करने वालों का तो आप सदा ही कल्याण करते हैं। उनको अधिकाधिक अन्न, धन और यज्ञ–सामग्रियों से युक्त करते रहते हैं। हे प्रभो ! यह तो आपका अटल नियम है।

हे ज्योतिःस्वरूप ! हे जीवन, ज्योति और जाग्रति के प्रसारक! हमारे अंग–प्रत्यंग को शुद्ध, पवित्र, निर्मल और उज्ज्वल बना दो। हे सर्वरक्षक और सर्वप्रकाशक ! हमारे जो दुर्गुण, दुर्व्यसन हैं, वे हमसे छूट जायें। जो तमोगुणी भाव और पदार्थ हमारे पास हों, आपकी कृपा से वे सब हमसे दूर हो जाएं। आपकी कृपादृष्टि हम पर सदा बनी रहे। आपकी दयावृष्टि हम पर सदा होती रहे। जो उत्तमोत्तम गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे हमें अधिकाधिक मात्रा में सदा ही प्राप्त होते रहें। आपकी कृपा से हमारा जीवन यज्ञमय हो। त्यागमय हो।

हे परमात्मदेव ! स्वार्थपरता, लोलुपता और संकीर्णता के अयज्ञीय भावों से हम सदा बचे रहें। आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना में हमारी प्रीति निरन्तर गाढ़ी होती रहे। पक्की ही पक्की होती चली जाये। आपको अपना रक्षक, पालक और पोषक जानते एवं मानते हुए, हम निरन्तर आपकी कृपा के पात्र बने रहें। हे प्यारे ! स्वीकार करो, स्वीकार करो, हमारी प्रार्थना को, स्वीकार करो।

(८)
प्रशंसनीय प्यारा



त्वं जामिर्जनानामग्ने, मित्रोऽसि प्रियः।
सखा सखिभ्यः ईड्यः।।

ऋ० १। ७५। ४

अग्ने-हे तेजोमय परम देव !	**प्रियः**- प्यारा
त्वम्-तू	**असि**-है।
जनानाम्-मनुष्यमात्र का	**सखिभ्यः**-प्रेम करने वालों का
जामिः-बन्धु	**ईड्यः**-अत्यन्त प्रशंसनीय
मित्रः-मित्र और	**सखा**-साथी और सहायक है।

अग्ने ! आप मनुष्य मात्र के प्रिय–बन्धु हैं और प्रिय–मित्र भी हैं। जो आपके साथ है, आप भी उसके साथ हैं। वास्तव में आप बहुत प्रशंसनीय हैं।

हे तेजोमय परमात्मन् ! मानव–तन पाकर भी हम आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने में असमर्थ से हो रहे हैं। सांसारिक विषय भोग में फंस कर हम बारम्बार आपको भूल जाने की भूल कर बैठते हैं। आपने कृपा करके हमें जो बहुत प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान किया है, उसका दुरुपयोग करने लगते हैं। परन्तु हे दुर्लभ देव ! देखना, हमारे

अज्ञान और हमारी भूल–चूक के कारण नाराज न हो जाना। हमारी भूलों और त्रुटियों को क्षमा कर देना। क्षमा करते रहना। जब–जब हम कोई भूल करें, हमें समझा देना। जब भी हम गिरने लगें, हमारा पथ–प्रदर्शन करते रहना। आप तो हमारे प्रिय–बन्धु हैं। निकट सम्बन्ध ी हैं। आपसे बढ़कर हमारा हितैषी और कोई नहीं हैं। संसार के रिश्ते–नाते तो सब झूठे हैं। मां–बाप, भाई–बन्धु, पति–पत्नी, बेटा–बेटी, ये सब स्वार्थ के साथी हैं। मित्रवर्ग व्यापारियों का टोला हैं। हमने भली प्रकार देख और समझ लिया है, ये रिश्ते–नाते और भाई–चारे तो झूठे हैं। आज और हैं, कल कुछ और। सार इनमें कुछ भी नहीं हैं। हे भगवन् ! हमारे सच्चे बन्धु तो एक मात्र आप ही हैं। आप ही युग–युग से हमारा प्रतिपालन और कल्याण–साधन करते आ रहे हैं। आप ही हमारे सच्चे मित्र हैं। आप ही हमारे सर्वश्रेष्ठ सखा हैं। हमारा कोई भी भेद आपसे छिपा नहीं हैं भले–बुरे जैसे भी हम हैं, आपके ही हैं। हमें भी आपके बन्धु, मित्र, प्रिय और सखा होने का गौरव प्राप्त है। हे सनातन मित्र ! हमें त्याग न देना। भूल न जाना। हमारी सुध लेना। हमारे दोष निवारण करते रहना।

हे प्रभो ! हमने आप जैसा, सर्वगुणसम्पन्न, सर्वशक्तिमान्, सर्वश्रेष्ठ और सर्वहितैषी मित्र पाया है, एक मात्र यही भाव है, जिसके कारण इस रूखे–सूखे जीवन में भी थोड़े से आनन्द की प्राप्ति, जब–तब हमें हो जाया करती है। आपकी बड़ाई करके और आपकी महिमा के गीत गा कर, हम अपने सौभाग्य पर इतराने–से लगते हैं। आपके शुभदर्शनों की चाह हमारे रोम–रोम में एक अद्‌भुत मादकता और आह्लाद का संचार कर देती है। हे महान् भगवन् ! हमें अपना प्रेम प्रदान करो। आपको अपना प्रेमी, बन्धु, मित्र और सखा बना कर रखने का सौभाग्य हमें सदा प्राप्त रहे। हम सदा ही आपके गुण गाते रहें।

(६)

हम तो वैदिक-धर्मी हैं



नकिर्देवा इनीमसि, न क्यायोपयामसि।
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।।

ऋ० १०। १३। ४७

हे भगवान् !
देवाः-हम उपासक लोग
नकिः-न तो
इनीमसि-हिंसा करते हैं,
और
नकि-न ही
आयोपयामसि-फूट फैलाते हैं, हम तो
मन्त्र श्रुत्यम्-वैदिक आदेशों के अनुसार
चरामसि-आचरण करते हैं।

न तो हम किसी का दिल दुखाते हैं और न ही हम संसार में फूट फैलाते हैं। हम तो वैदिक धर्मी हैं।

हे दयानिधे ! हम तो उपासक लोग हैं। हम आपको पाना चाहते हैं। आपसे एक क्षण के लिये भी हम नहीं विलग होना चाहते। हम पर ऐसी कृपा करो, जिससे आपकी उपासना में हमारा अनुराग उत्तरोत्तर बढ़ता रहे, बढ़ता ही जाये।

भगवन् ! हमने अहिंसा–मार्ग का अवलम्बन किया है। मनसा, वाचा, कर्मणा, किसी भी प्रकार की हिंसा हम नहीं करते। न तो हम किसी के प्रति अपशब्दों का प्रयोग करते हैं। न किसी को सताते हैं। न किसी का दिल दुखाते हैं। न ही हम प्राणियों का घात–प्रतिघात करते हैं। हे प्राणाधार ! हम तो प्राणि–मात्र के प्रति आत्मवत् व्यवहार करते हैं। जो कुछ हम अपने लिये शुभ समझते हैं, वहां दूसरों के लिये भी शुभ समझते हैं।

हे सच्चिदानन्दस्वरूप ! हम तो आप ही के प्रेमपन्थ का प्रचार करते हैं। किसी प्रकार के भेद–भाव के प्रचारक हम नहीं हैं। किसी प्रकार की फूट हम नहीं फैलाते। वर्गवाद के झगड़े–बखेड़े हम नहीं फैलाते। मजहब के नाम पर, स्वार्थ के आधार पर, अथवा संकीर्णतावश, भाई को भाई से लड़ाने और मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बनाने वाली किसी भी पद्धति वा योजना में हमें कुछ भी विश्वास नहीं है।

हम तो वैदिक धर्मी हैं। वेदों का पढ़ना पढ़ाना, और सुनना सुनाना, हम अपना परम–धर्म समझते हैं। जड़–पूजक और मनुष्य–पूजक हम नहीं हैं। हम तो एक ईश्वर–वाद के विश्वासी हैं। एक मात्र आपके ही भक्त और उपासक हैं।

हे गुरुओं के भी गुरो ! हे ज्ञान–पुंज ! हे सब सत्य विद्याओं के आदिम–उपदेशक ! हमें बल दो। हमें ज्ञान दो। हमें सब प्रकार का उत्तम–ऐश्वर्य प्रदान करो। जिससे हम भी अपने पूर्वज ऋषि–मुनि–महात्माओं के चरण–चिह्नों पर चलने में समर्थ हो सकें। हम भी आपकी महिमा के गीत गाते और आनन्द के तार बजाते हुए अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

(१०)

व्रतपते ! व्रत हों पूर्ण हमारे



अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि, तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।।

यजु० १। ५

अग्ने-हे ज्योतिः स्वरूप !
व्रतपते-हे सत्यव्रत परायण साधक पुरुषों के पालक ! पोषक !
व्रतं चरिष्यामि-मैं भी व्रत धारण करना चाहता हूं। आपकी कृपा से मैं **इदम्**-इस
तत्-उस अपने व्रत का **शकेयम्**-पालन कर सकूं।
तत्-मेरा वह व्रत
राध्यताम्-सफल करो, सिद्ध हो। वह व्रत यह है कि
अहम्-मैं
अनृतात्-मिथ्याचारों को छोड़कर
सत्यम्-सत्य को
उपैमि-प्राप्त करता हूं।

अग्ने ! मैं भी व्रत धारण करना चाहता हूं।
व्रतपने ! आपकी कृपा से मेरा व्रत सफल हो।

मुझे व्रत–पालन की सामर्थ्य प्रदान करो।

यह मैं, झूठ को छोड़ना और सत्य को ग्रहण करना चाहता हूं।

हे सर्व–जगदाधार ! व्रतपते! परमेश्वर ! आप ही इ अखिल–ब्रह्मण्ड की उत्पत्ति करने वाले हैं। आप ही इसकी स्थिति रक्षक हैं। और हे स्वामिन् ! महाप्रलय के विधायक भी आप ही हैं आपके न्याय, नियम और नियन्त्रण में ही संसार के संयोग, वियो आदि सब कार्य हो रहे हैं। आपके नियमों में बन्धे हुए ही सूर्य, चन्द्र पृथ्वी–आदि ग्रह–उपग्रह गति कर रहे हैं। खेतियां पक रही हैं। आपकी व्यवस्था से ही जन्म–मरण का चक्कर चल रहा है। हे सर्वोपरि–नियामक ! हे सर्वोच्च–न्यायकारिन् ! आपको हमारा बारम्बार नम्स्कार है।

हे व्रतों के पालक पोषक देव ! हम भी व्रतों का अनुष्ठान करना चाहते हैं। हमें बल दो। सामर्थ्य प्रदान करो। हे सर्वरक्षक! हे सबके जीवन दाता ! आपकी कृपा से हमारे व्रत पूर्ण हों। हम उत्तम आचरण से युक्त होकर, आपकी पवित्र–सत्ता के प्रति हार्दिक अनुराग रखने वाले बनें। किसी भी अवस्था में हम आप को अपने ह्वदय से दूर न होने दें। आंखों से ओझल न होने दें।

आपकी कृपा से हमारे मन के सब विकार दूर हों। चित्त की चंचलता हट जाये। मोह–मांया के बन्धन कट जायें। आपकी विमल ज्योति निरन्तर हमारा पथ आलोकित करती रहे। आपकी कृपा से हम निरन्तर उच्च जीवन की ओर अग्रसर होते रहें।

हे ज्योतिर्मय ! सत्य और असत्य, कुछ मिले जुले से रूप में हमारे सामने आते हैं। सत्य और असत्य में भेद करना हमारे लिये कठिन हो जाता है। ढंग और ढोंग के अन्तर को इच्छा रहते हुए भी हम समझ नहीं पाते। हे दयानिधे ! हमने अपनी शक्ति–भर यत्न किया है, परन्तु सत्य के शुद्ध रूप को देखने में हम समर्थ नहीं हो सके हैं।

तब तो हमें एकमात्र आपकी कृपा के ही आश्रित होना पड़ रहा है। दया करो। हे पिताजी ! हमारी पुकार सुनो।

हमें असत् से सत् की ओर ले चलो।
अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो।

हम भवसागर पार करेंगे



विश्वा उत त्वया वयं, धारा उदन्या इव। अति गाहेमहि द्विषः।।

ऋ० २। ७। ३

हे प्रभो ! तेरे सहारे से

इव-जैसे **वयम्**-हम सब उपासक
उदन्या-किश्ती के द्वारा
धारा-जलधार को पार करते हैं,
उत-उसी प्रकार
त्वया-तेरी कृपा से,
विश्वा-सब
द्विषः-शत्रुओं और कष्टों को
अति गाहे महि - सुगमता से लांघ जायें। पार करें।

जैसे, लोग नाव में बैठकर, नदी को पार करते हैं, ऐसे ही तु[illegible] से युक्त होकर, हम उपासक लोग भी सब विघ्न—बाधाओं को लां[illegible] जायें।

हे निर्बलों के बल ! हे सकल जगत् के आधार परमात्मन् ! हम[illegible] देखा है, लोग नाव में बैठते हैं और उस पार पहुंच जाते हैं। दयानिधे[illegible] हम भी इस संसार सागर को पार करना चाहते हैं। हमें एक मा[illegible] आपका ही आश्रय है। पिताजी ! और हमारा कौन है? आपके ही भरो[illegible]

पर हमने भी अपनी नाव का लंगर खोल दिया है। हमारी जीवन–नैया, सागर की ऊंची–ऊंची, चंचल और डरावनी लहरों की गोद में पड़ी हुई खेल रही है। हे करुणासागर ! हमने अपनी शक्ति–भर पुरुषार्थ किया है परन्तु हम थक गये हैं। अब तो यह आपकी दया से ही उस पार पहुंचेगी। अब तो आप ही इसके खेवन–हार हैं। एक मात्र आपका ही भरोसा है। हे दयालो देव ! आप तो युग–युग से अपने भक्तों को पार करते आ रहे हैं। कृपा करके हमें भी उस पार पहुंचा दो। हमारा बेड़ा पार लगा दो।

यह मार्ग हमारा जाना–पहिचाना हुआ नहीं है। इसमें सैंकड़ों प्रकार की बाधायें हैं। कहीं काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और अहंकार रूपी शत्रु हमारा धर्म लूटने के लिये आ खड़े होते हैं। कहीं वासनाओं की नुकीली और कठोर चट्टानों का खटका है। सब ओर विषयरूपी मगरमच्छ आदि भयानक जलचर अपने मुंह फैला रहे हैं, परन्तु हे सबके रक्षक ! सर्वशक्तिमन् प्रभो ! जब आप हमारे साथ हैं, तो फिर हम चिन्ता क्यों करें ? कठिनाइयां चाहे अधिक हों, विघ्न पर विघ्न आते हैं, तो आयें। आपकी कृपा से हम सब विघ्न–बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे। हम उस पार अवश्य ही पहुंचेंगे।

परमात्मन् ! आपसे तो कुछ छिपा नहीं है। इस पार तो दुःख ही दुःख है। राग और द्वेष का दावानल भक–भक जल रहा है। स्वार्थपरता और आपा–धापी का बोल बाला है। छूत–छात है। ऊंच–नीच है। अज्ञान है। अभाव है। जीव का जीव बैरी है। मत्स्य न्याय प्रचलित है। यहां हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता। हम यहां नहीं रहेंगे। हम तो चलकर उस पार ही रहेंगे।

परमात्मन्। उस पार सरलता है। सात्विकता है। त्याग की और परोपकार की भावनायें हैं। समानता है। एकता है। सुख, शान्ति और आनन्द हैं। प्रभुजी ! हमें उस पार पहुंचा दो। हम तो उस पार ही रहेंगे।

मैं सबका बन जाऊं



प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु मा कृधि।
प्रियं सर्वस्य पश्यत, उत शूद्रे उतार्ये।।

अथर्व० १९। ६३। १

मा-मुझे	शूद्रे-शूद्रों
देवेषु-विद्वानों में	उत-एवं
प्रियम्-प्रिय	आर्ये-धनिक वर्गों में
कृणु-बनाओ	भी मुझे सबका प्रेम
मा-मुझे	पात्र बनाओ। मुझे तो
राजसु-राजपुरुषों में	पश्यतः-देखने वाले
प्रियम्-प्रिय	सर्वस्य-सब प्राणियों का,
कृधि-बनाओ	चेतन मात्र का, प्यारा
उत-और	बना दो।

मुझे देवों का प्यारा बना दो। मुझे राजपुरुषों का प्यारा बना
मुझे सबका प्यारा बना दो। समाज सेवकों का भी धनिक वर्गों का

हे प्रभु जी ! हमें देवों का प्यारा बना दो। आपकी कृपा से

विधि–पूर्वक देवपूजा करें। संगति–करण करें। दान करें। उत्तम नियमों का कभी भी उल्लंघन न करें और अवसर आने पर संसार की सुख–शान्ति में वृद्धि करने के लिये, हम अपने तन, मन और धन का भी बलिदान कर दें। आपकी कृपा से उत्तम कोटि के विद्वानों की संगति हमें सदा प्राप्त रहे और उनके उपदेशामृत का पान कर–करके हमारे मन का सब मैल धुल जाये।

हे जीवनदाता ! हमें राजपुरुषों का प्रिय बना दो। आपकी कृपा से हम पूर्णतेजस्वी, पराक्रमी, निर्बलों के सहायक, बात के पक्के और मानी एवं शूरवीर हों। हम अपने देश के अच्छे नागरिक और जाति के सर्वश्रेष्ठ अंग बनें। आपकी कृपा से हममें कोई चोर न हो। कमजोर न हो। दुर्व्यसनी न हो। अपराधी न हो। पापी न हो। हमारा जीवन अस्तिकता से परिपूर्ण और परोपकार मय हो।

हे विश्वनियन्ता! हमें वैश्य–वर्ग में प्रिय बना दो। हमें ऐसा बल, बुद्धि और योग्यता प्रदान करो, जिससे हम कुशलता पूर्वक व्यापार करके संसार की सुख–सामग्री में वृद्धि कर सकें। यथायोग्य रीति से भोगों का व्यापार करते हुए, संचय और वितरण करते हुए, हम संसार के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकें।

हे सर्वाधार परमेश्वर ! हमें सेवक–वर्ग का विशेष प्रिय बना दो। आपकी कृपा से हम अति गहन सेवा–व्रत का पालन करने में समर्थ हों। हम उत्साह पूर्वक सेवकों की भी सेवा करें। अपनी सेवा के द्वारा हम सबके पाप, ताप, भय, संकट, अभाव और अज्ञान आदि का सब दोषों को दूर कर दें।

हे परमात्मन् ! हमें सबका प्यारा बना दो। सबको हमारा प्यारा बना दो। हे प्रेममय प्रभो ! अखिल मानव–जाति को प्रेमभाव से आपूरित कर दो। प्राणिमात्र को दृढ़ प्रेम–सम्बन्ध में बांध दो।

हे सबके रक्षक और जीवनदाता ! आपकी कृपा से हम सर्व–प्रि बन कर सदा ही आपकी महिमा के गीत गाते रहें।

हे सबके मित्र ! हे दीनबन्धो ! अपनी प्रेम–गंगा का प्रवाह सर्व प्रवाहित कर दो। द्वेषभाव के बढ़ रहे तूफान का अंत कर दो। अखि मानव–जाति को समभाव और भ्रातृ–भाव से रहने और जीने क योग्यता प्रदान करो।

(१३)
तुझ-सा कोई और नहीं है



न कि इन्द्र त्वदुत्तरं, न ज्यायोऽस्ति वृत्रहन्।
नक्येवं यथा त्वम्।।

सामo पूo ३। १। १०

वृत्रहन्-हे अज्ञान आदि दुर्गुणों के नाशक !	अस्ति-है
इन्द्र-हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामिन् !	न-और न ही
न कि-न तो कोई	ज्यायः-कोई तुझसे बड़ा है।
त्वत्-तुझसे	न कि-न ही कोई
उत्तरम्-श्रेष्ठ	एवम्-ऐसा है
	यथा-जैसा
	त्वम्-तू है।

इन्द्र ! तुझसे बढ़कर और कोई नहीं है।
वृत्रहन ! तुझसे बड़ा और कोई नहीं है।
कोई ऐसा भी नहीं है, जैसा कि तू है।

हे राजाओं के भी राजा ! हे सब ऐश्वर्यों के स्वामी ! पत्ता–पत्ता तेरी दिव्य सत्ता का परिचायक है। अनन्त आकाश में, सुविस्तृत सागरों में, सूर्य में, चन्द्र में, तारागणों में, जड़ में भी और चेतन में भी, तेरी

अद्भुत महिमा झलक रही है। तेरी ही उज्ज्वल ज्योति जगमगा रही है। तेरी सत्ता सर्वगुणमयी है, आनन्दमयी है, सर्वोपरि है। कोई तुझसे बढ़कर नहीं है। अविद्या और अन्धकार का निवारक तू ही है। तुझसे बड़ा कोई नहीं है।

पिताजी ! आंखें पसार–पसार करके दूर–दूर तक मैंने देखा, जल में, थल में, नभ में, तुझ–सा कोई और नहीं है। ऋषियों, मुनियों, ज्ञानियों और तेरे भक्तों ने मुझे बताया है, तुझ–सा कोई और नहीं है।

हे अनुपमेय ! हमें अपनी भक्ति का वर दो। आपकी कृपा से हमारा जीवन सब प्रकार से सरल, सात्विक, शान्त, उन्नत और आदर्श हो। आपकी कृपा दृष्टि हम पर सदा बनी रहे। हमें शुद्ध मेधाबुद्धि प्रदान कीजिये। हमें भी अपने पूर्वजों, ऋषि, मुनि, महात्माओं और वीर पुरुषों के चरण–चिह्नों पर चलने की शक्ति दीजिये। प्रभो ! हमारा जीवन यज्ञमय हो। त्यागमय हो। परोपकारमय हो।

भगवन् ! हम अबोध बालक तेरी महिमा को जानने में असमर्थ हैं। तेरे स्वरूप को समझने में असमर्थ हैं। हे दुर्लभदेव ! तुझे पा लेने की हमारी कल्पना बड़ी उत्कट है। परन्तु तेरी प्राप्ति का मार्ग हमें ज्ञात नहीं है। हम बारम्बार यत्न करके भी अभी तक कृतकार्य हो नहीं सके हैं। पिताजी अब तो हमें आपकी दया का ही भरोसा है। हे नाथ ! दयादृष्टि करो। कृपादृष्टि करो। हमारे दृश्य की मरुस्थली में जो धूल–सी उड़ रही है, उसे शान्त कर दो। हमारे मन की सूखी हुई बगिया को हरी भरी कर दो। पल्लवित और पुष्पित कर दो।

हे जगदीश ! आपकी ख़ोज में मैं दूर–दूर गया हूं। बीहड़ वनों में, ऊंचे–ऊंचे पर्वतों में, मैंने आपको खोजा है। समुद्र की गहराइयों में घुस कर देखा है। अब यह विलम्ब क्यों हो रहा है? आप मुझे मिल क्यों नहीं जाते? आखिर यह लुक–छिप का खेल और कब तक चलेगा?

(१४)

'मैं' 'तू' बने, 'तू' 'मैं' बने



यदग्ने स्यामहं त्वं, त्वं वा घास्या अहम्।
स्युस्टे सत्या इहाशिषः।।

ऋ० ८। ४४। २३

अग्ने-हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर !
यत्-जब
अहम्-मैं
त्वम्-तू
स्याम्-हो जाऊंगा
वा-अथवा
घा-जब
त्वम्-तू
अहम्-मैं
स्याः-बन जायेगा, तभी
इह-इस संसार में
ते-तेरे
आशिषः-आशीर्वाद
सत्या-सत्य
स्युः-सिद्ध होंगे।

अग्ने ! जब 'मैं' 'तू' बनेगा, या जब 'तू' 'मैं' बनेगा, तभी तेरे सब आशीर्वाद सत्य सिद्ध होंगे।

हे सकल सृष्टि के रचयिता परम-पिता परमात्मन् ! तेरी ही

पवित्र ज्योति अखिल विश्व में जगमगा रही है। तेरी ही दया-सुगन्धि सर्वत्र व्याप्त है। तू ही सबका जीवनदाता है। तू ही सबका प्रगतिदाता है। तू ही हमारे सब दोषों और दुःखों को हरने वाला है।

पिता जी ! आपकी कृपा से हमारा जीवनयज्ञ सफल हो। दयानिधे ! जो उत्तमोत्तम गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ हैं, उनकी प्राप्ति हमें सदा होती रहे और जो दोष, दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्जन और दुष्ट पदार्थ हैं, आपकी कृपा से वे, हमसे सदैव दूर रहें। परमात्मन् ! किसी भी आसुरी प्रभाव से हमारा जीवन-यज्ञ दूषित न हो। भ्रष्ट न हो।

प्रभो ! आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना के द्वारा हम आप के दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव को धारण करना चाहते हैं। आपके सम्पूर्ण वैभव को अपनी इस फटी-पुरानी गुदड़ी में समेट लेना चाहते हैं। स्वामिन् ! हमारी इस बाल-लीला पर हंस कर ही न रह जाना। इस प्रयास में हमारी सहायता भी करना। सभी पिता अपनी सन्तान को अपने व्रतों की शिक्षा-दीक्षा देते हैं। सभी सुयोग्य पुत्र अपने पिता का अनुकरण किया करते हैं। हे हमारे सनातन पिता! आज तो हमारे हृदय में भी आप जैसा ही बनने की लालसा पैदा हो गई है। हम भी आप जैसे ही बन जाना चाहते हैं। हम भी न्यायकारी, आत्मनिर्भर, तेज से परिपूर्ण, दयालु, ज्ञान-सम्पन्न, सन्तोषयुक्त, सौम्य, अभय, आनन्दी, परोपकारी और मुक्त बन जाना चाहते हैं। हे प्रभो ! हमारा पथ-प्रदर्शन करो। हमें सफल मनोरथ करो।

समय-समय पर आपके शुभ-आशीर्वाद, उपदेश और आश्वासन हमें प्राप्त होते रहते हैं। वेद के रूप में ज्ञान का अक्षय-कोष आप ने हमें प्रदान किया है। नाना प्रकार के फल, फूल, वनस्पति, अन्न और वैभव आपने हमें दे रखा है। आपकी कृपा से हमें सभी कुछ प्राप्त है। परन्तु हे पिताजी ! साफ कहने के लिये हमें क्षमा करो। हमें तो ये

पदार्थ अब भाते नहीं हैं। सुहाते नहीं हैं। अब तो, जब 'मैं' 'तू' बनेगा और 'तू' 'मैं' बन जायेगा, हम तभी सन्तोष करेंगे। तभी आपके सब आशीर्वाद सफल होंगे।

हे नाथ ! तुझे नमस्कार है। हे मेरे अपने आप मुझे नमस्कार है। तुझे भी नमस्कार। मुझे भी नमस्कार। तुझे भी नमस्कार। मुझे भी–

नमस्तुभ्यं नमो मह्यं, तुभ्यं मह्यं नमो नमः।

(१५)

जन्म-मरण के बन्धन काटो



मोषु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्।
मृडा सुक्षत्र मृडय।।

ऋ० ७। ८९। १

वरुण-हे भली प्रकार वरने योग्य	शरीर में
राजन्-प्रकाशमान् परमेश्वर ! आपकी कृपा से	उ-फिर
अहम्-मैं	मा-न
मृन्मयम्-इस मिट्टी के	सुगमम्-जाऊं
गृहम्-घर में अर्थात् पार्थिव	सुक्षत्र-हे सर्वरक्षक भगवन् !
	मृड-कृपा कर, रक्षा कर।
	मृडय-मुझे सुखी कर।

हे वरुण ! राजन् ! ऐसी कृपा कर जिससे फिर कभी इस मिट्टी के घर में मुझे रहना न पड़े।

हे सुक्षत्र ! कृपा कर। कृपा कर।

हे प्रभो ! जीवन–यात्रा में हमने बहुत क्रष्ट उठाये हैं। आप से मिलने का उद्देश्य लेकर हम इस मार्ग पर चले थे। चलते–चलते युग

बीत गये। आज भी हम चल ही रहे हैं। कभी हम मार्ग भूल गये। कभी किसी अज्ञानी के बहकावे से पथ–भ्रष्ट हो गये। कभी मार्ग की चमक दमक ने हमें मोहित कर लिया और कभी हम सोना–चांदी हीरा मोती, लाल जवाहर के ढेर बटोरने में लग गये। पिताजी ! अपनी भूलों पर आज हमें हार्दिक पछतावा हो रहा है। हम बहुत ही आकुल और व्याकुल हैं। अब हमारा उद्धार कब होगा? कब हमारी इस यात्रा का अन्त होगा? कब हमें आप के शुभ दर्शन होंगे? यही चिन्तायें, रात दिन हमें व्यथित किया करती हैं। अब तो हमें एक–एक पग कोसों के समान प्रतीत हो रहा है। वियोग की एक–एक घड़ी युगों के समान लग रही है। संसार के भोग फीके प्रतीत होते हैं। वैभव काट खाने को आता है। कल तक के प्रिय भाई–बन्धु और सुत–दारा, आज हमें बेगाने जान पड़ते हैं। अब तो हमें तेरी ही लौ लगी है तू ही चाहिये, तू ही।

हे आनन्ददाता ! हमने जान लिया है, एक मात्र आप ही प्राप्त करने योग्य हैं। आप ही वर्णन करने योग्य हैं। और सब तो नाशवान हैं, आप ही अमर, नित्य, शुद्ध बुद्ध और मुक्त–स्वभाव हैं। आप ही अपनी सामर्थ्य से इस अखिल ब्रह्माण्ड का शासन कर रहे हैं।

दयानिधे ! आप वरणीय भी हैं और वर्णनीय भी। उपास्य भी और स्तुत्य भी। आपकी प्राप्ति के लिये भक्त–मण्डलियों ने जहां तहां अनेक विध आयोजप आरम्भ कर रखे हैं। आपके स्तुति पाठ गाये जा रहे हैं। आपकी न्याय–व्यवस्था की बड़ाई हो रही है। सब कोई आपकी ही आस लगाये बैठे हैं। दीनानाथ ! सबको अपना भक्ति–धन प्रदान करो। सबकी आशायें पूर्ण कर दो। सब को निहाल कर दो। हमारे हृदय–मन्दिर में आपके प्रेम की ज्योति सदा सुप्रकाशित रहे।

हे देव ! आपकी कृपा से हमारे आचार–विचार शुद्ध हों। आप के प्रेमी सन्तों की संगति हमें प्राप्त रहे। प्रभु जी ! हम पाप और पुण्य

के बन्धनों से छूट जावें। ऐसी कृपा करो, हमें ऐसी बुद्धि दो, जिससे हमें बारम्बार जन्म–मरण के चक्कर में न आना पड़े। दयामय ! इस मिट्टी के पिंजरे से हमारा पीछा छुड़ा दो। हमें मोक्ष फल के अधिकारी करो। हे सर्वरक्षक ! हमारी सहायता करो। हमारी रक्षा करो।

(१६)

जीवन दो हे प्राणाधार !



यदेमि प्र स्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः।
मृडा सुक्षत्र मृडय।। ऋ० ७। ८६। २

अद्रिवः-हे सुखों के वर्षक प्रभो !
यत्-यह जो मैं
दृतिः-धौंकनी से
ध्मातःन-धौंका हुआ-सा हांपता और कांपता हुआ
प्रस्फुरन् इव-पतंग वा गुब्बारे के समान उड़ा–उड़ा
एमि-फिर रहा हूं, ऐसे मुझ दुःखी जन को
सुक्षत्र-हे सबकी रक्षा करने वाले जगदीश्वर !
मृडा-बचा।
मृडय-जन्म मरण के चक्कर से छुड़ाकर मोक्ष प्रदान कर

हे सुखवर्ष ! मैं कटे हुए पतंग की तरह उड़ा–उड़ा फिर रहा हूं। मैं लोहार की धौंकनी के समान हांप और कांप रहा हूं। हे सुक्षत्र ! कृपा कर। कृपा कर।

कटा हुआ पतंग हवा के झोंकों के साथ–साथ उड़ा चला जा

रहा है। लूटने के लिये बालक भी उसके पीछे दौड़ रहे हैं। अब-त में ही यह भूमि पर आ गिरेगा। जो चाहे इसे लूट ले। लूटने क अधिकार सभी को है। न जाने बेचारा फिर कभी उड़ेगा कि नहीं सुरक्षित रहेगा, या लुटेरों की छीना-छपटी में ही अपने अस्तित्व क खो देगा। यह पतंग किसका है? किसी का भी नहीं। अब यह कि का नहीं है। जब से यह कटा है, तब से धनी के साथ, इसके सम्ब ा का भी अन्त हो गया है। जब तक धनी से इसका सम्बन्ध था, य आकाश में उड़ रहा था। धनी से सम्बन्ध-विच्छेद का ही तो यह फ है कि यह पतन की ओर जा रहा है। और इसका जीवन भी खतरे पड़ गया है।

हे प्रभो ! मेरा-तेरा सम्बन्ध बना रहे। कभी टूटने न पाये। को ऐंच-पेंच, कोई रगड़ा या झटका, मेरे आपके सम्बन्ध को न काटे परमात्मन् ! मैं सदा ही आपका बना रहूं। मेरी दशा कटे हुए पतंग जैसी न हो।

हे नाथ ! कहने को मैं जीवित हूं। परन्तु, हे देव ! यह जीवन भी कोई जीवन है? मेरी इन्द्रियां विषयों के ध्यान में निमग्न हैं, मेरा मन राग-द्वेष की आग में पड़ा जल-भुन रहा है। हे उत्तम रक्षा-साधनों वाले मालिक ! मेरा उद्धार करो।

लोहार की धौंकनी सांस लेती है। क्या वह जीवित है? नहीं, वह जीवित नहीं है? क्या वह चेतन है? नहीं। जिसका परमात्मा से अनुराग नहीं है, वह मनुष्य भी लोहार की धौंकनी के समान ही सांस लेता और छोड़ता है। हे सच्चिदानन्दस्वरूप ! हे सुखों के वर्षक ! हे अमृत के स्रोत ! क्या मैं भी लोहार की धौंकनी के समान ही हांपता-कांपता रहूंगा? मुझे जीवन दो। हे प्रभो ! मुझे मोक्ष-फल प्रदान करो।

मृत्यु का भय मुझे बहुत भयभीत करता रहता है। जीवन की

लालसा में फंसकर मैं अनेक प्रकार के पापाचार में लिप्त हो जाता हूं। अकर्तव्य–कर्म कर डालता हूं। अभक्ष–पदार्थ खा जाता हूं। उचित और अनुचित का विवेक खो बैठता हूं। पिता जी ! मृत्यु की विभीषिका को मुझसे सदा के लिये दूर कर दो। मुझे अमर–जीवन प्रदान करो। हे देव ! अपने अमृत के भण्डार में से कुछ मेरी ओर भी बहा दो। लुढ़का दो। एक दो घूंट। दो चार बूंद। कुछ न कुछ।

(१७)

दुर्बल के प्राण पुकार रहे



क्रत्वः समह दीनता, प्रतीपं जगमा शुचे।
मृडा सुक्षत्र मृडय।।

ऋ० ७। ८६। ३

शुचे-हे सबके पवित्र करने वाले स्वामिन् ! मैं
दीनता-अपनी दुर्बलता के
समह-कारण अपने
क्रत्वः-कर्तव्य पथ से
प्रतीपम्-उल्टा दिशा में
आ जगम-चला जाता हूं।
सुक्षत्र-हे दीनबन्धो !
मृड-कृपा कर।
मृडय-मुझे कल्यांण से युक्त कर। मुझे सन्मार्ग पर चला।

शुचे ! दुर्बल होने के कारण मैं। कर्तव्य पालन में प्रायः भूल कर बैठता हूं। उल्टे मार्ग पर चल देता हूं।

हे सुक्षत्र ! कृपा कर। कृपा कर।

हे शुद्ध, बुद्ध और मुक्त–स्वभाव परमेश्वर ! हमें पवित्र करो। पवित्रता की एक परम्परा को प्रवाहित कर दो। आपकी कृपा से हमारा तन पवित्र हो। मन पवित्र हो। धन पवित्र हो। आचरण पवित्र हो। वातावरण पवित्र हो। हे प्रभो ! हमारे सब मैल धुल जायें। हम पूर्ण सात्विक और पूर्ण आस्तिक बन कर सदा ही आप की स्तुति–प्रार्थना

उपासना करते रहें। आपकी महिमा के गीत गा–गाकर कृत–कृत्य होते रहें।

हे प्रेमघन ! हम बहुत गरीब हैं। एक साथ ही बहुत अभाव हमें प्राप्त हुए हैं। बल, बुद्धि, विक्रम हमारे पास नहीं हैं। अन्न की कमी रहती है। धन की कमी सताती है। स्वास्थ्य की कमी कष्ट देती है। विद्या की कमी नाना प्रकार के भ्रम जाल में फंसा देती है।

हे सर्वज्ञ ! आप तो जानते ही हैं, अपनी अनेक–प्रकार की गरीबी के कारण समय–समय पर हमको बहुत से निषिद्धकर्मों का आचरण करना पड़ जाता है। हम कर्तव्य की अवहेलना करने लगते हैं और उलटे मार्ग पर चल पड़ते हैं। पहले छिप–छिप कर उत्तम नियमों का उल्लंघन करते हैं, फिर पूरे निर्लज्ज बन जाते हैं। खुल्लम–खुल्ला पापाचरण में फंसकर अपराधी–जीवन व्यतीत करने लगते हैं। हे अन्तर्यामिन् ! अभावों से पीड़ित होकर ही हम दोषों और दुर्गुणों में लिप्त हो जाया करते हैं। परमात्मदेव ! कृपा करो। हमारे सब अभावों का निवारण कर दो। सब दोषों को दूर कर दो।

हे दीनानाथ ! हमें सन्तोष–धन प्रदान करो। अभावों में भी मस्त रहने की योग्यता प्रदान करो। थोड़े में भी निर्वाह करने की शक्ति प्रदान करो। हमें सत्य के प्रति अनुराग दो। सत्य की शोध करने, सत्य को स्वीकार करने और सत्य के लिये ही जीवित रहने का सामर्थ्य हमें प्रदान करो। हे देवाधिदेव ! आपकी कृपा से हम सत्–पथ पर दृढ़ रहें। बुराइयों से कभी भी, किसी भी प्रकार का समझौता हम न करें।

हे दीनबन्धो ! ऐसे अनेक अवसर हमारे सामने आते रहते हैं, जबकि हम कर्तव्य–दुविधा में पड़ जाते हैं। यह करूं या वह? इस प्रकार की विकट समस्या हमारे सामने आकर खड़ी हो जाती है। हे सर्वेश्वर ! ऐसे अवसर पर यदि हमारी अल्पज्ञतावश, हमारा निर्णय ठीक न हो, तो हमारी भूल सुधार देना। हमें सत्–पथ की प्राप्ति कराना।

(१८)
पानी में मीन प्यासी



**अपां मध्ये तस्थिवांसं, तृष्णाविदज्जरितारम्।
मृडा सुक्षत्र मृडय।।**

ऋ० ७। ८६। ४

हे प्रभो !
अपाम्-जल के, व्यापक परमात्मा के
मध्ये-मध्य में
तस्थिवांसम्-बैठे हुए मुझ
जरितारम्-स्तोता को,
तृष्णा-प्यास
अविदत्-लग रही है, तृष्णा ने मुझे आ घेरा है
सुक्षत्र-हे रक्षा के उत्तम साधनों से युक्त देव!
मृड-अनुकम्पा कर।
मृडय-तृष्णा के फन्दे से मुझे बचा

मैं स्तोता, पानी में बैठा हूं, और फिर भी प्यासा मर रहा हूं। हे सुक्षत्र ! कृपा कर ! कृपा कर। गेरी प्यास बुझा।

हे दीनबन्धो ! आपकी पवित्र ज्योति सर्वत्र जगमगा रही है, परन्तु फिर भी हमारी आंखें उसे देखने में असमर्थ हो रही हैं। आपकी पवित्र सुगन्धि सर्वत्र विद्यमान है; परन्तु हमारी नासिका उसे ग्रहण करने में असमर्थ है। आपका कल्याण कारक उपदेश रात–दिन होता रहता है परन्तु हमारे कान उसे सुनने में असमर्थ हैं। आपकी सर्वत्र विद्यमान

पवित्र सत्ता को अनुभव करने में भी तो हम असमर्थ हो रहे हैं। चंचल–मन हमें इधर–उधर भटका रहा है। साधन–सम्पन्न होने पर भी हम पड़े हानि उठा रहे हैं, कष्ट भोग रहे हैं। प्रभु जी ! हमारी अवस्था सचमुच ही ऐसी विचित्र है। हम पानी के बीच में बैठे हैं और फिर भी प्यासे मर रहे हैं।

हे सुखों के वर्षक दयालु भगवन् ! जब हम उपासना आरम्भ करते हैं और आपकी पवित्र महिमा का चिन्तन करने लगते हैं, तो नाना प्रकार की तृष्णायें आकर हमें घेर लेती हैं, नाना प्रकार की चिन्तायें और बाधायें उपस्थित होकर हमारे उपासना–क्रम को अस्त–व्यस्त कर देती हैं। हमारा ब्रह्मयज्ञ नष्ट हो जाता है। देवयज्ञ भंग हो जाता है। अन्य यज्ञों की भी यही अवस्था हो जाती है। इधर हम यज्ञ में बैठे, उधर तुरन्त ही तृष्णा समूह आकर उपस्थित हो गया। भगवन् ! बहुत बार ऐसा हो चुका है। देव ! इन आसुरी, भावों से हमारे यज्ञों की रक्षा करो। हमें बल दो। दृढ़ता दो। साहस दो। जिससे हम सब प्रकार के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकें। सब प्रकार की विषम–परिस्थितियों में भी अपने सम्पूर्ण यज्ञ कार्यों का विधि–पूर्वक पालन कर सकें। आपकी कृपा से जो–जो साधन, योग्यतायें और परिस्थितियां हमें प्राप्त हैं, हम उन सबका सदुपयोग कर सकें। हे सर्वव्यापक देव! सभी कुछ आपने हमें दे रखा है, आपकी थोड़ी–सी अनुकम्पा और हो जाये, तो बस, हमारा बेड़ा पार हो जाये। हमें सब प्रकार के कष्टों से छुटकारा मिल जाये।

हे आनन्दस्वरूप ! इस तृष्णा डायन के पंजे से हमें छुटकारा कब मिलेगा? हम तो इसके आघातों को सहते–सहते बहुत जर्जरित होते जा रहे हैं। यही हमें आवागमन के चक्कर में डालती है और यही हमें आपके उत्तम नियमों को तोड़ने के लिये उत्साहित किया करती है। अब तो इस दुष्टा, पापिष्ठा से हमारा पीछा छुड़ा दो।

(१६)
प्रभु जी ! मोरे अवगुण चित्त न धरो



यत्किचेदं वरुण दैव्ये जने, अभिद्रोहं मनुष्याश्च रामसि। अचित्ती यन्तव धर्मा युयोपिम, मा नस्त स्मादेनसो देव रीरिषः।।

ऋ० ७। ८६। ५

वरुण—हे भक्तवत्सल !
अचित्ती—मूर्खतावश
मनुष्याः—हम मनुष्य
यत् किंच—जो कुछ
इदम्—यह
दैव्ये-दिव्य
जने—पुरुषों के प्रति
अभिद्रोहम्—द्रोह का,
चरामसि—आचरण करते हैं,
यत्—और जो
तव—आपके
धर्मा—नियमों का
युयोपिम—उल्लंघन करते हैं,
तस्मा—उस
एनसः—विरुद्धाचरण रूप पाप से
देव—हे देव !
नः—हमें
मा—मत
रीरिषः—मार।

हे वरुण ! यदि हम मनुष्यों ने कभी श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति द्रोह

किया है और यदि मूर्खतावश हमने कभी आपके उत्तम नियमों को तोड़ा है, तो इन अपराधों के कारण तू हमें मत मार। हमें अपने व्यवहार में सुधार करने का अवसर प्रदान कर।

हे अखिल विश्व के रचयिता एवं पालक–पोषक परमेश्वर ! आपने ही अपनी कृपा से यह मानव तन और यह विविध प्रकार का ऐश्वर्य, हमें प्रदान किया है। परन्तु हे देव ! अपने अज्ञान के कारण हम तो इसका सदुपयोग करने में सर्वथा असमर्थ हो रहे हैं। हे भगवन् ! हम चाहते तो हैं कि अपने आपको, आपके महान् दान का अधिकारी सिद्ध करें। आपके दान को पाकर संसार में यज्ञों का विस्तार करें। परन्तु समय आने पर हम चूक जाते हैं। आसुरी–भाव और तमोगुण हमें अपने जाल में फंसा लेते हैं। हे दयामय ! हमारे इस अज्ञान को दूर कर दो, जिसके कारण हम बारम्बार पापाचरण में प्रवृत्त हो जाते हैं। कभी आपके प्रेमी सन्त–महात्माओं का निरादर और अपमान करने लगते हैं। कभी आपके बताये हुये उत्तम नियमों का उल्लंघन करते हैं। कभी आत्म–हनन करते हैं और कभी देश–द्रोह जैसे नीच–कर्म भी कर डालते हैं। हे ज्ञान के भण्डार ! अमृत के सागर ! इस पापमय जीवन से हमारा उद्धार करो। हमें उत्तम बुद्धि का वरदान दो। अविद्या, अज्ञान और तमोगुण के मायाजाल से हमारी रक्षा करो। परमात्मदेव ! ज्ञान के अभाव में उत्तम सुखदायक पदार्थ भी हमारे लिये दुःखदायक बने हुए हैं। इस दुःखमय जीवन से हमें बचाओ।

हे सर्वपूज्य देव ! अपनी करनी पर हम बहुत लज्जित हैं। और तो और साधु स्वभाव वाले सज्जन पुरुषों के प्रति भी हमारा व्यवहार छल–प्रपंच–पूर्ण होता है। कभी हम उनके अनुयायी होने का दम्भ करते हैं। औरी कभी अपने धर्मावतार होने का पाखण्ड रचते हैं। और इससे भी बढ़कर कभी–कभी सत्य को झूठ और झूठ को सत्य सिद्ध

करने का प्रयास भी हम किया करते हैं। हे सर्वज्ञ परमात्मन् ! आपसे तो हमारी वास्तविकता छिपी हुई नहीं है। भगवन् ! हमारे दुष्टाचरण पर क्रोध न करना। हम जो कुछ भी भूल–चूक और अपराध करते हैं, उसे क्षमा कर देना। हे प्रभो! हम जो कुछ भी बुरा करते हैं, अज्ञान के कारण ही करते हैं। हम नहीं जानते कि हम क्या करते हैं। हम तो बेबस से हो जाते हैं और बार–बार पाप–कर्म कर डालते हैं। परन्तु हे पिताजी! हमें पाप प्रिय नहीं हैं। चाहते तो हम यही हैं कि उत्तम कर्म किया करें। परन्तु हम भूल कर बैठते हैं। हम जानते नहीं कि उत्तम कर्म कैसे किये जाते हैं। हे प्रभुजी ! हमारे अवगुण चित्त न धरो। हमें ज्ञान–धन प्रदान करो।

(२०)

जीवन वाले ! जीवन दे



दृते दृँ्ह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।।

यजु० ३६। १६

दृतं-हे विघ्न विदारक
परमात्मन् !
मा-मुझको ते-आपकी
दृँ्ह-दृढ़ करो।
ते-आपको
संदृशि-अध्यक्षता में, देख
रेख में रह कर मैं
ज्योक्-दीर्घ और आनन्दमय
जीव्यासम्-जीवन को प्राप्त
करूं।

संदृशि-अध्यक्षता में, देखरेख
में रह कर मैं
ज्योक्-दीर्घ और आनन्दमय
जीव्यासम्-जीवन को अवश्य
ही प्राप्त करूं।

हे विघ्नविनाशक ! मुझे दृढ़ करो। आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना द्वारा मैं निरन्तर उच्च, उच्चतर और उच्चतम जीवन को प्राप्त करूं।

हे सर्व जगत्–नियन्ता अचल और अखण्ड परमात्मन् ! मुझे

दृढ़ता प्रदान करो। यज्ञों का अनुष्ठान करने के लिये और उत्तम धार्मिक–जीवन व्यतीत करने के लिये, मुझे दृढ़ता प्रदान करो। हे स्वामिन् ! मुझे ऐसी योग्यता और शक्ति प्रदान करो, जिससे न तो मैं किसी उत्तम मर्यादा को भंग करूं और न ही भंग होने दूं। न तो किसी उत्तम मर्यादा का लोप करूं और न ही लोप होने दूं।

हे दयानिधे ! जब कभी मेरे मान–सम्मान का प्रश्न उपस्थित हो, तो मुझे अपनी सन्मान रक्षा की शक्ति प्रदान करो। जब कोई धन के जोर से मेरी आत्मा की आवाज को दबाना चाहे, तो मुझे धन–दौलत के ढेर पर ठोकर मार देने की दृढ़ता प्रदान करो। हे परमात्मन् ! संसार में जब कभी, और जहां कहीं भी, अन्याय और अत्याचार का हाथ आगे बढ़े, या ऊपर उठे, तो उसे रोकने और तोड़ डालने की क्षमता, मुझे प्रदान करो। आपकी कृपा से मैं दृढ़व्रती बनूं और अपने देश की, धर्म की, जाति की, मातृ–पितृ–शक्ति की रक्षा की, रक्षा और सेवा, दृढ़ होकर यथाविधि सदा करता रहूं। प्रमाद कभी भी न करूं।

भगवन् ! मुझे नीरोग– चिर–जीवन करों। मैं आपको सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वरक्षक आदि जानते और मानते हुए, सदा ही उत्तम नियमों का आचरण करते हुए, निरन्तर आप के प्रेम और आपकी कृपा का पात्र बना रहूं। दयानिधे ! भोग–विलास के लिये दीर्घजीवन की कामना मैं नहीं करता। अन्याय और अत्याचार करने वाली दृढ़ता, मुझे नहीं चाहिये। मैं तो सदा ही आपके समक्ष उपस्थित रहना चाहता हूं। आपको अपने सामने, और अपने आपको आपके सामने, रखना चाहता हूं। आपको देखने में, और लगातार देखते रहने में, जो आनन्द मुझे मिलता है, वह और कहीं नहीं मिलता। हे कृपानिधान ! मैं आपको सदा देखता ही रहूं। देखता ही रहूं। देखता ही रहूं। देखता ही रहूं। देखता··· ।

हे नारायण ! आपके देने में कुछ कसर नहीं है, फिर भी मैं तो मांगूंगा ही। आपसे मांगने में जो आनन्द है, वह प्राप्त करने में नहीं है। मेरी अपूर्ण–अभिलाषायें नित्य–प्रति, मुझे आपके द्वार पर लाकर खड़ा कर देती है, यह क्या मेरे लिये कम सौभाग्य की बात है? आज तो मैं और कुछ नहीं, भिक्षा में आपको ही मांगता हूं। आपसे, और आपको ही। आप मिल गये, तो सब कुछ मिल गया। आप नहीं, तो कुछ भी नहीं।

(२१)
मिथ्याचार से हमें बचाना



बह्विदं राजन् वरुण, अनृतमाह पूरुषः।
तस्मात् सहस्रवीर्य, मुंच नः पर्यंहसः।।

अथर्व० १६। ४४। ८

वरुण-हे पाप निवारक	**आह**-बोलता है।
राजन्-हे न्यायकारी परमेश्वर !	**सहस्रवीर्य**-हे सर्वशक्तिमान् देव !
पूरुषः-मनुष्य	**तस्मात्**-उस झूठ बोलने के
इदम्-यह	**अंहसः**-पाप से
बह्वी-बहुत से	**नः**-हमें
अनृतम्-झूठ	**परिमुंच**-बचाइये, छुड़ाइये।

हे वरुण ! राजन् ! यह पुरुष बहुत प्रकार के झूठ बोलता है। हे सर्वशक्तिमान् ! इस मिथ्याचाररूपी पाप से हमारी रक्षा करो।

हे अखिल ब्रह्माण्ड के सर्वोपरि–शासक ! हे सर्वश्रेष्ठ ! हे सत्य–स्वरूप देव ! आप तो जानते ही हैं, यह मनुष्य कैसे–कैसे ढोंग रचता–रचाता है। कैसे–कैसे दम्भ और मिथ्याचरण करता है। अत्यन्त तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिये धोखा देना और छल–प्रपंच करना मानो इसका स्वभाव ही हो गया है। यह कैसे–कैसे तुच्छ और घृणित कार्य करता रहता है? प्रभो ! मनुष्य अज्ञानी होते हुए भी, ज्ञानी होने का ढोंग

रचता है, मिथ्यावादी होने पर भी, सत्यवादी होने का प्रदर्शन करता है, कृपण होने पर भी, दाता और उदार होने का स्वांग रचता है। हे जीवनदाता ! हमें ऐसे भ्रष्ट–जीवन से बचाना। आपकी कृपा से हम पूर्णज्ञानी, यज्ञ–प्रिय, सत्यवादी, परोपकारी बनकर अपना जीवन सफल कर सकें। मनसा, वाचा, कर्मणा कभी भी मिथ्याचार का आचरण न करें। दूसरों के स्वत्वों का अपहरण न करें। किसी को कष्ट न दें। आपकी कृपा से, आपके प्रेमी–भक्तों में हमारी गणना हो। आपका प्रेम हमें सदा प्राप्त रहे। हे आनन्दघन ! हमारे सब प्रकार के दोषों, अभावों और पापों का निवारण करो। आपकी कृपा से हम पेट के लिये पाप न करें। आंखों के वश में होकर, पाप न करें। कानों के वश में होकर, पाप न करें। नासिका के वश में होकर, पाप न करें। रसना के वश में होकर, पाप न करें। विषय–वासना के वश में होकर, पाप न करें।

प्रभुजी ! मनुष्य एक झूठ बोलता है। फिर झूठ को छिपाने के लिये एक और झूठ बोलता है। फिर उसे भी छिपाने के लिये और एक झूठ बोलता है। इस प्रकार, वह एक बहुत ही लम्बी झूठ–परम्परा को जन्म दे देता है। जान–बूझ कर झूठ बोलता है और फिर अपने सब झूठों को सत्य प्रमाणित करने का उद्योग भी करता है। कैसे बेहयाई और ढिठाई करता है ? हे नाथ ! सब प्रकार के मिथ्या आचार–विचार से हमारी रक्षा करो।

जगदीश्वरजी ! जो कुछ थोड़ी–बहुत बुद्धि, शक्ति और सामग्री हमारे पास है, यह सब आपकी कृपा का ही फल है। आप की कृपा से ही हमारा सत्यव्रत पूर्ण होगा। दयानिधे ! दया करो। दया करो। हमें पूर्ण सत्यवादी बना दो। हमारे सब प्रकार के दोष और अभाव दूर भगा दो। हमें ऐसी शक्ति दो, जिससे तुच्छ–स्वार्थों की पूर्ति के लिये, हमें अन्याय और अनीति का कभी भी आश्रय न लेना पड़े। हम आपके कोपभाजन न बनें।

(२२)

हमारे शिक्षक उत्तम हों



सं पूषन्विदुषा नय, यो अंजसानुशासति।
य एवेदमिति ब्रवत्।।

ऋ० ६।५४।१

पूषन्-हे सबके पालक ! पोषक ! मुझे ऐसे	अनुशासति-मुझे उपदेश दे।
विदुषा-उत्तम विद्वान् की	यः-जो
सं नय-संगति प्राप्त करा	इदम्-यह पदार्थ
यः-जो	एव-ऐसा है,
अंजसा-अपने उत्तम ज्ञान और शुद्ध उच्चारण से	इति-इस प्रकार
	ब्रवत्-बताये, यथार्थ ज्ञान का साक्षात्कार कराये।

हे पूषन् ! हमें ऐसे सुयोग्य आचार्य की प्राप्ति करा, जोकि अपने उत्तम उपदेशों से हमारे जीवन को सफल बना दे। जो हमें संसार के सब पदार्थों का, जितने और जैसे भी वे हैं, पूर्ण बोध प्रदान करे।

हे अखिल विश्व के पालक और पोषक प्रभो ! हमें एक उत्तम गुरु की आवश्यकता है, जो हमें जीवन–संग्राम में विजयी होने की

शिक्षा विधिपूर्वक दे सके। जो हमें संसार के सब पदार्थों का मर्म, रहस्य और स्वरूप, तात्विकरूप में समझा सके।

भगवन् ! हम तो बहुत दुर्बल और अल्पज्ञ हैं। सन्मार्ग को जानने में और जान भी जायें, तो उस पर चलने में, हम बहुत असमर्थ हैं। पथ–प्रदर्शन के लिये गुरु तो हमें अवश्य ही चाहिये। देव ! बहुत से दम्भी लोग हमारी परिस्थिति और आवश्यकता से अनुचित लाभ उठा रहे हैं। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये, वे हमारे गुरु, नेता और शिक्षक आदि के रूप में आकर, हमको घेर लेते हैं। वे हमारे जीवन से खेल करते हैं। और हमारी जीवन शक्ति को नष्ट करते रहते हैं। स्वयं भूले हुए हैं, फिर भी हमें राह बताते हैं। स्वयं पतित हैं, फिर भी पतितोद्धारक होने का दम्भ करते हैं। उनका अपना ज्ञान तो शून्य है, फिर भी हे दीनानाथ ! इन झूठे–गुरुओं, दुष्ट नेताओं और मूर्ख अध्यापकों के पंजे से हमें छुड़ाओ।

प्रभु जी ! हमें तो ऐसे गुरु की आवश्यकता है, जोकि तत्वदर्शी हो। पूर्णज्ञानी हो। ब्रह्मवादी हो। पूर्ण आस्तिक हो। आप का पूर्णभक्त हो। जो अपने अनुभव सिद्ध ज्ञान से हमें सब प्रकार की उत्तम और आवश्यक शिक्षाओं से विभूषित कर सके। जो कार्य और कारण सृष्टि की पहेली को भली प्रकार समझा सके। आत्मा और परमात्मा तथा बन्ध और मोक्ष की शिक्षा भली प्रकार दे सके। जो हमारे सब प्रकार के संशय दूर कर सके।

हे संसार के आदिम पथ प्रदर्शक ! हमारा भी पथ–प्रदर्शन करो। हमें सत्य दर्शन की योग्यता प्रदान करो। पात्रता प्रदान करो। सत्य के मुख पर यह जो प्रदर्शन का चमकदार आवरण पड़ा है, इसे छिन्न–भिन्न कर डालो। दूर कर दो।

हे ज्ञानस्वरूप ! आप तो हमारे गुरुओं के भी गुरु हैं। अखिल

ब्रह्माण्ड के स्रष्टा हैं। ज्ञान के आदि-प्रचारक आप ही तो हैं। आप ही हमारे गुरु बनो। जैसे सृष्टि के आरम्भ में, वेदों का प्रकाश करके, आपने महर्षियों पर ज्ञान वर्षा की थी, वैसे ही हमें भी निहाल कर दो। ज्ञानांजन की शलाका से हमारे अज्ञानान्धकार का भी निवारण कर दो। कृपा करो। कृपा करो।

(२३)

मुझे प्रेम का प्याला पिला दे प्रभो !



यो वो शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।।

अथर्व० १। ५। २

हे आनन्द सागर !
यः-जो
वः-आपका
शिवतमः-अत्यन्त कल्याण कारक
रसः-रस है,
तस्य-उसका
नः-हमें
इह-इस संसार में ही, इसी जन्म में ही
भाजयत-उपभोग कराओ, पान कराओ।
उशतीः-सन्तान का हित चाहने वाली
मातरः-माताओं के
इव-समान।

जो आपका उत्तम आनन्दामृत है, हमें तो वही प्रदान करो। सन्तान का शुभ चाहने वाली माता के समान हमें तृप्त और पुष्ट करो।

बच्चा भूख से व्याकुल होकर रोने लगा। माता पास आकर खड़ी

हो गई, प्रभु से बच्चे को निहारने लगी। सहसा ही आवेश में आकर माता ने बालक को उठा लिया। छाती से लगा लिया। दूध पिलाने लगी। बच्चा अब पूर्ण सन्तुष्ट हैं। माता भी आनन्द विभोर हो रही है। प्रेममग्न हो रही है।

हे जगज्जननी ! हम तेरे अबोध बालक भी भूख से बहुत व्याकुल हो रहे हैं। तू कहां है? क्या तुझे हमारी करुण पुकार सुनाई नहीं देती?

मां ! आज तो हमें वह रस पिला, जिसके बाद फिर किसी और रस को पीने की आवश्यकता ही न रहे। जिसे पीकर हम वीर बनें। धीर बनें। पूर्ण तथा परिपुष्ट होकर कर्तव्य क्षेत्र में आगे ही आगे बढ़ते चले जायें। कोई क्लेश, कोई अभाव, कोई त्रुटि और कोई संशय बाकी न बचे। कोई आशा अपूर्ण न रह जाये।

मां ! हमारा सब प्रकार से कल्याण हो। तेरी आशीर्वाद से और तेरी छत्रछाया में, हमें वह शक्ति और योग्यता प्राप्त हो, जिससे हम अपना और संसार का, सब प्रकार से हित साधन कर सकें और तेरे सपूत होने का पूर्ण गौरव प्राप्त करें। माताजी ! हमें ऐसी शिक्षा दो, जिससे किसी की माता से हमारा झगड़ा न हो। किसी के पुत्रों से भी हमारा झगड़ा न हो।

माताजी ! सभी माताएं अपने–अपने बच्चों को उत्तमोत्तम वस्त्र पहनाती हैं, उत्तमोत्तम भोजन, फल और मिठाइयां खिलाती हैं, उत्तमोत्तम लाड, लडाती हैं। फिर तू तो माताओं की भी जननी है, पिताओं की भी तू तो जगज्जननी है। तू सर्वोपरि मातृ–शक्ति है। हम तेरे भोले बालक तुझे बारम्बार नमस्कार करते हैं। नमस्कार करते हैं और अपना अधिकार मांगते हैं। हां, हां, अधिकार मांगते हैं। हम अपना दूध मांगते हैं मां ! हमें अपना सर्वश्रेष्ठ दूध पिला। अपनी अबाध ज्ञान–धाराओं को बल–धाराओं को, पावक–धाराओं को, प्रवाहित कर। मां ! हमा

भूख–प्यास मिटा दे। सत्य बना दे। हमें शिव बना दे। सुन्दर बना दे अमर बना दे।

हे मां ! सांसारिक खान–पान और विषय भोग तो सभी क्षण भंगुर हैं। सभी नशे चढ़ते हैं और उतर जाते हैं। आज जो हमें वह रस पिला, जो सर्वश्रेष्ठ है। वह रस प्रदान कर जिसकी मादकता हमें पूर्णतया तृप्त कर दे। ऐसा नशा चढ़े जो कभी भी न उतरे। हे मां ! हमें अपना प्रेम रस प्रदान कर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२४)

नमो नारायण !



उप त्वाग्ने दिवे दिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।।

सामः १। २। ४

अग्ने-हे ज्योतिर्मय !
वयम्-हम नमः-नमस्कार
दिवे दिवे-प्रतिदिन
दोषावस्तः-सायं और प्रातः
धिया-बुद्धिपूर्वक, धारणा
ध्यान और समाधि के
द्वारा अपना
भरन्तः-लेकर
त्वा-आपके
उप-समीप
एमसि-आ रहे हैं।

हम चल पड़े हैं। आपके समीप आ रहे हैं। प्रातः—सायं चलते हुए हम बुद्धि पूर्वक नमस्कार की भेंट आपकी सेवा में ला रहे हैं।

हे प्रभो ! हम आ रहे हैं। नित्य—प्रति, सायं—प्रातः नये—नये उत्साह और उमंग के साथ, हम आपकी ओर अग्रसर हो रहे हैं। पिताजी ! इस समय हमारी अवस्था उस मनुष्य जैसी है, जिसे विवश होकर अपने परिवार, परिजनों और घरबार से दूर विदेश में रहना पड़ता है तथा जिसका ध्यान अपने घर की ओर ही लगा रहता है।

दयानिधे ! हम भी तो एक प्रकार के यात्री ही हैं। यह संसार

भी तो हमारे लिये विदेश ही है। यहां हमारा मन लगता नहीं है। इसीलिये तो अब हम आपकी ओर आ रहे हैं। हम अपने सनातन घर की ओर आ रहे हैं।

पिताजी ! यहां विदेश में हमने जो कुछ पाया सो खा लिया। कुछ विशेष कमाई हम कर नहीं सके हैं। जमा पूंजी को ही बैठ कर खाते रहे हैं। आपको भेंट देने के लिये भौतिक ऐश्वर्य तो हमारे पास नहीं है। परन्तु, हम अपनी एक सर्वश्रेष्ठ वस्तु उपहार स्वरूप, अपने साथ ला रहे हैं। दयामय ! वह है, हमारा नमस्कार। हम आपको अपना नमस्कार भेंट करेंगे। हम आपको अपना आत्मसमर्पण करने की अभिलाषा लेकर आ रहे हैं। इस भेंट को स्वीकार करना, अपने दीन, हीन, शरणागत भक्तों की लाज रखना।

जगदीश्वरजी ! ब्राह्मण अपने ज्ञान–ध्यान सहित आपकी सेवा में उपस्थित हो रहे हैं। क्षत्रिय अपने अस्त्र, शस्त्र और भुजबल सहित आ रहे हैं, वैश्य अपने धन–धान्य और व्यापार कौशल की भेंट ला रहे हैं। शूद्र तलवार की धार पर चलते हुए, कठिन सेवाव्रत की पूर्ति करते हुए आ रहे हैं। सभी अपनी–अपनी 'नमो नमः' निवेदन करने के लिये उतावले से हो रहे हैं। सभी का ध्येय एक है। लक्ष्य एक है। भेंट सामग्री भी सबके पास एक ही है। हे स्वामिन ! संसार के कामी, कपटी, घमण्डी लोगों ने हमारे नमस्कार धन को हड़प लेना चाहा था, परन्तु, आपकी पवित्र भेंट किसी दूसरे को तो हम दे ही नहीं सकते। अन्याय और दुष्ट–दल सामने तो हम कभी झुक ही नहीं सकते।

हे पूर्ण पुरुष ! अब हमारी इस यात्रा का शीघ्र ही अन्त होने दो। हे नारायण ! हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं। नमोनारायण। नमो नारायण। नमो. . . . . . ।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च। हे सुख स्वरूप ! हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

(२५)

तू ही मात-पिता प्रभु मेरा



त्वं हि नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।।

ऋ० ८। ६८। ११

वसो-हे सर्वाधार !	त्वम्-तू ही हमारी
त्वम्-तू	माता-माता
हि-ही	बभूविथ-है।
नः-हमारा	अध-अतः हम
पिता-पिता है।	ते-तेरा ही
शतक्रतो-हे अनन्त क्रिया कुशल	सुम्नम्-मनन
	आ ईमहे-करना चाहते हैं।

तू हमारा पिता है। तू ही हमारी माता है ! हे सर्वशक्तिमन्! अब तो हम एक मात्र तेरा ही मनन करना चाहते हैं।

हे सर्वाधार परमेश्वर ! आप ही इस अखिल भू—मण्डल के उत्पत्तिकर्ता हैं। आप ही इसके स्थितिकर्ता हैं और आप ही इस के प्रलयकर्ता भी हैं। दीनानाथ ! संसार का प्रत्येक पदार्थ आप की महान् विभूतियों का परिचायक है। चन्द्र, सूर्य और सम्पूर्ण ग्रह—उपग्रह, आपकी व्यवस्था से ही अपनी—अपनी परिधि में घूम रहे हैं। आपके बनाये हुए नियमों में चल रहे हैं। आपकी अटल—व्यवस्था के अनुसार

ही सब प्राणी विविध योनियों में रहकर, अपने–अपने कर्मों के फल प्राप्त कर रहे हैं। हे सर्वशक्तिमन् भगवन् ! आपकी महिमा अपार है। आपका गुणानुवाद करने की शक्ति हममें नहीं है।

हमारे हित के लिये आपने जो–जो उत्तम व्यवस्थायें कर रखी हैं, और जो उत्तमोत्तम ऐश्वर्य हमें प्रदान किया हैं, उसे समझना भी तो हमारे लिये कठिन हो रहा है। आपकी विभूतियों को प्राप्त करके ही हम धनी बने हैं, बली बने हैं, अधिकारी बने हैं, मानव–तन पाकर आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने के अधिकारी बने हैं। प्रभुजी ! आप ही हमारे परमहितैषी हैं। आप ही हमारे रक्षक और शासक हैं। आप ही हमारे सखा और शिक्षक हैं। आप ही हमारे माता और पिता हैं। प्रभुजी ! आपसे बढ़कर हमारा अपना और कोई नहीं है। आप ही हमारे एक मात्र आधार हैं।

हे हमारी सनातन माता ! हे हमारे सनातन पिता ! हमें ऐसी शक्ति और योग्यता प्रदान करो, जिससे हम आपके सुयोग्य पुत्र प्रमाणित हो सकें। हम कभी भी आपके प्रति विरुद्धाचरण न करें। आपस में-अपने भाई–बहिनों से झगड़ा बखेड़ा न करें। सम्पूर्ण विश्व को अपना प्रिय–कुटुम्ब समझ कर श्रेष्ठ आचरण करते हुए, हम सदा ही आपकी कृपा और प्रेम के पात्र बने रहें। आपके चरणों में हमारा दृढ़ विश्वास और श्रद्धाभाव सदा बना रहे। सब अवस्थाओं और सब कालों में, आपको अपना परम–सहायक और सर्वद्रष्टा जानकर, हम सदा ही धर्माचरण करने वाले बनें, और सब प्रकार के अधर्माचरण से बचे रहें। सुख में, दुःख में, नगर में और वन में पृथिवी में और आकाश में, घर में और बाहर, उठते–बैठते, किसी भी स्थान में, किसी भी काल में, और किसी भी अवस्था में, हम आपको न भूलें, हम आपसे परांगमुख न हों। हे नाथ ! हमें यही वर दो। हमें अपनी भक्ति का वरदान प्रदान करो। हमें अपने आनन्द का अधिकारी बनाओ। हमें भक्ति रस का पान कराओ।

(२६)

हे आनन्दघन चहुं ओर सुख की वर्षा करो



स्वादिष्ठया मदिष्ठया, पवस्य सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः।।

ऋ० ६।१।१

सोम-हे शुद्ध, शान्त और आनन्दमय प्रभो !
स्वादिष्ठया-सु–स्वादिष्ट और
मदिष्ठया-मस्त बना देने वाली
धारया-धारा के रूप में
पवस्व-प्रवाहित होकर आ जा .
इन्द्राय-मुझ भक्त पुरुष के
पातवे-पीने के लिये, पालन करने के लिये
सुतः- तू प्रेरित है, तेरी पुकार हो रही है

हे सोम ! स्वादिष्ट और मस्त बनाने वाली धारा के रूप में बह कर आ और हमें पवित्र कर।

भक्तपुरुष आपके आनन्द–रस को पीने के लिये ही यह अर्चन–पूजन कर रहे हैं।

हे आनन्दस्वरूप भगवन् ! हमें अपने आनन्दामृत का प्याला

पिला दो। हमें अपने ज्ञानामृत का प्याला पिला दो। हमें अपने प्रेमामृत का प्याला पिला दो। जब से हमें आपकी लग्न लगी है, सांसारिक विषय–भोग एक क्षण के लिये भी हमें भाते नहीं हैं। भौतिक–ऐश्वर्य हमें काट खाने को दौड़ता है। आपके प्रेम–पाश में बंध कर यत्न से कमाया और संचित किया हुआ ऐश्वर्य, हमने आपके मार्ग में लुटा दिया है। रिश्ते–नाते हम तोड़ चुकें हैं। घर बार हम छोड़ चुके हैं। तन, बदन की सुध–बुध बिसरा दी है। अब तो हमारे दर्शन की चाह ही हमें लिये–लिये फिर रही है। आपके लिये ही हम जीवित हैं। हमें दर्शन दो। हे भगवन् ! हमें दर्शन दो। यदि हमारा यह काया का चोला, आपके दर्शनों में बाधक हो रहा हो, तो इसका भी अन्त कर दो। हमें न तो इसकी चाह है, न परवाह। हम तो आपको चाहते हैं। केवल आपको ही चाहते हैं।

बहो, बहो, स्वादिष्ट–रस का रूप धारण करके बहो। मैं उस रस का पान करूं। उस रस में नहाऊं, धोऊं, क्रीड़ा करूं। मैं भी रसमय बन जाऊं।

बना दो, मुझे पागल बना दो। मस्त बना दो। जो चढ़कर कभी नहीं उतरता, अपनी भक्ति का, वह नशा मुझे पिला दो। मैं आपके भक्ति रस का पान करूं। सदा किया करूं। मेरे सब पाप धुल जायें। सब ताप शान्त हो जायें।

दयामय ! मेरे हृदय में जो धूल–सी उड़ती रहती है, उसे धो डालो। मेरे हृदय की मरुस्थली को हरी–भरी, फूली–फली, सुवासित वाटिका का रूप दे दो।

हे सोम ! हे आनन्दघन ! हे करुणासागर ! हे शुद्ध, बुद्ध, पवित्र और मुक्तस्वभाव ! मैं कब से आपको पुकार रहा हूं। मेरी अरदास सुनो। युग–युगान्तर से मैं आपके द्वार पर अपनी पुकार लगा रहा हूं।

अब तो मेरा मनोरथ पूर्ण कर दो। जगदीश्वर ! आपको पा जाऊं, तो सब कुछ मुझे मिल जाये। आपके अतिरिक्त और कुछ मुझे नहीं चाहिये।

हे दीनानाथ ! माया ने मुझे बहुत काल तक ठगा है। बहुत भुलावे दिये हैं। देर तक मुझे अनेक प्रकार के प्रलोभनों में बांध कर रखा है। परन्तु, हे करुणाघन ! अब तो मैं साक्षात् आपको ही पाना चाहता हूं। आपको ही पाना चाहता हूं। आपको ही पाना चाहता हूं।

(२७)
हे सोम्य ! हमारा तो बस तू ही है



इन्द्र शुद्धो न आ गहि, शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः।
शुद्धो रयिं नि धारय, शुद्धो ममिद्धि सोम्यः।।

ऋ० ८।६५।८

इन्द्र-हे सबके स्वामिन् !
हे सब प्रकार के
ऐश्वर्य के दाता ! तू
शुद्धः-सब प्रकार से शुद्ध
और निर्मल है। तू
नः-हमारे पास
आ गहि-आ जा। तू
हमारा हो जा। अपनी
शुद्धाभिः-शुद्ध
ऊतिभिः-प्रीतियों और
शक्तियों से हमें भी
शुद्धः-शुद्ध और पवित्र कर

शुद्धः-शोधक तू हमें
रयिम्-अन्न और धन
निधारय-प्रदान कर।
शुद्धः-तू शुद्ध, बुद्ध और मुक्त
स्वभाव वाला है।
सोम्यः-तू शान्त और आनन्द
से परिपूर्ण है।
मम-मेरा तो
हि-निश्चय से
इत्-बस एक मात्र तू ही है।
तेरे सिवा मेरा और
कोई नहीं हैं।

हे इन्द्र ! तू शुद्ध है। हमारे पास आ जा। अपनी पवित्र शक्तियों के द्वारा हमें पुष्ट कर। हमें शुद्ध अन्न और धन प्रदान कर। हे सोम्य ! हमारा तो बस तू ही है।

हे सब जगत् के प्रकाशक और सुखों के वर्षक परमात्मन् ! आप सब प्रकार के मलों और सब प्रकार के क्लेशों से रहित हैं। जन्म–मरण के बन्धन से रहित हैं। आप सर्वथा पवित्र और सब को पवित्र करने वाले हैं। हे दीनानाथ ! मेरे मन पर मलिनता का जो आवरण–सा पड़ा रहता है, कृपा करके उसे दूर कर दीजिये। मेरी दृष्टि में जो दोष आ गये हैं, उनका निवारण कर दीजिये। मेरी वाणी में जो कठोरता और वाचालता है, उसे हटा दीजिये। भगवन् ! आपकी कृपा से मेरी सब इन्द्रियां सर्वथा शुद्ध हो जायें। तन पवित्र हो। मन पवित्र हो। भोजन पवित्र हो। धन–वैभव पवित्र हो। आजीविका के साधन पवित्र हों। मित्र, बन्धु पवित्र हों। विचार पवित्र बने रहें। और मेरा वातावरण भी सदा शुद्ध, पवित्र बना रहे।

हे ज्योतिःस्वरूप ! अपनी पावक–शक्तियों का प्रवाह मेरी ओर कर दो। आपकी पवित्रता का प्रवाह आये और मेरी सम्पूर्ण पाप–वासनाओं के कूड़े–कर्कट को बहाकर ले जाये। मुझे पूर्णतया शुद्ध, निर्मल, शान्त और हरा–भरा बना जाये।

हे नाथ ! हमें पवित्रता प्रदान करो। सब प्रकार की पवित्रता प्रदान करो। हम, मनसा वाचा कर्मणा सदैव पवित्र बने रहें। किसी प्रकार की वासना और किसी प्रकार की क्लेश–कालिमा, आपकी कृपा से हमें दूषित न करें, कलंकित न करे। अन्याय और अनीति हम से दूर रहे। निन्दा और चुगली हमसे दूर रहे। अभद्रता और अकल्याण हमसे दूर रहें ! प्रभुजी ! हम सब प्रकार के छल–प्रपंच, कपट–व्यवहार और अधर्माचरण से बचे रहें।

हे भक्तवत्सल ! जो आपके प्रेमी सद्धर्म–प्रचारक महापुरुष हैं, उनकी सत्संगति हमें सदा प्राप्त रहे और हमारी पवित्रता की निरन्तर रक्षा होती रहे। किसी भी कारण से हमारी पवित्रता का लोप न हो। भंग न हो। आपकी कृपा से हम सदा ही नेक–कमाई किया करें। अपने धर्म–धन की सदा ही उन्नति करते रहें। संसार की सुख–शान्ति की सदा ही अभिवृद्धि करते रहें। अपने कर्तव्य–पथ से हम कभी भी भ्रष्ट न हों।

हे सुखों के वर्षक ! शुभगुणों के प्रसारक ! हे सोम्य ! मेरे तो आप ही हैं। बस आप ही हैं। दूसरा कोई नहीं। मेरे तो आप ही हैं। मेरे तो आप ही हैं।

(२८)

जाको राखे साइयां, मार सके न कोय



यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा।
नकिः स दभ्यते जनः।।

साम० पू० प्र० २ अर्ध० २ द० १० मन्त्र १

वरुणः-सर्वरक्षक	सः-वह
मित्रः-सबके मित्र	जनः-मनुष्य तो
अर्यमा-पूर्ण न्यायकारी	नकिः-किसी से भी
प्रचेतसः-सर्वज्ञ परमात्मदेव	न-नहीं
यम्-जिसकी	दभ्यते-मारा जा सकता,
रक्षन्ति-रक्षा करते हैं	दबाया जा सकता।

सर्वज्ञ वरुण, मित्र और अर्यमा जिसकी रक्षा करते हैं, उसे तो कोई मार नहीं सकता।

हे जगदीश ! आप ही सबके जीवनदाता और सब सत्यविद्याओं एवं सब पदार्थों के आदि—मूल हैं। आपकी शक्तियां और ज्ञान—रश्मियां संसार के सभी पदार्थों एवं कार्यों का संचालन कर रही हैं। आप सत् हैं, चेतन हैं और आनन्द स्वरूप हैं। हे सच्चिदानन्द स्वरूप ! आपकी कृपा से हम भी सदा प्रबुद्ध और जागृत बने रहें। हे सर्वज्ञ ! सब प्रकार

के दुष्कर्मों से बचकर आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना हम सदा किया करें। नाथ ! हमें अपनी भक्ति का वरदान दो।

परमात्मन् ! आप वरुण हैं। आप सबके रक्षक हैं भय, शोक आदि के निवारक आप ही हैं। आप सर्वश्रेष्ठ हैं। संसार में प्राप्त करने योग्य एक मात्र आप ही हैं। अपने भक्तों को आप चुन भी लेते हैं। जो सच्चे हृदय से, आपसे प्रेम करता है, उसका परित्याग नहीं करते। हे वरुण ! हमारा ध्यान रखना। हमारी सुधि लेते रहना।

भगवन् ! आप ही मित्र हैं। आप सबके हितैषी और कल्याण साध् ाक हैं। पापियों और रोगियों के लिये भी आपने उद्धार और सुधार के मार्ग प्रशस्त कर रखे हैं। कीड़ी और हाथी सभी का ध्यान, आपको सदा रहता है। हे मित्र ! हमें भूल न जाना।

हे अन्तर्यामिन् ! आप ही संसार के सर्वोपरि नियामक, व्यवस्थापक और शासन कर्त्ता हैं। आप राजाओं के भी राजा हैं। आपके नियमों का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता। आप ही प्राणी मात्र को उन–उनके शुभ और अशुभ कर्मों का फल यथायोग्य देते हैं। नाथ ! आपकी कृपादृष्टि हम पर सदा बनी रहे। हमें कभी भी आपका कोप–भाजन न होना पड़े। आपकी छत्रछाया में रहकर, हम सदा ही कल्याण को प्राप्त करते रहें।

हे दीनानाथ ! जो आपकी शरण में आ जाता है, वह सब प्रकार के भय और संकट से मुक्त हो जाता है। आपके शरणागत का कोई भी, कुछ भी अपकार नहीं कर सकता। माया उसे ठग नहीं सकती। अत्याचार उसे झुका नहीं सकता। पाप उसे आकर्षित नहीं कर सकता। प्रलोभन उसे बांध नहीं सकते।

हे सर्वोपरि देव ! जब आप साथ हैं, तो फिर क्या चिन्ता है? क्या शोक है? क्या मोह है? आपके शरणागत भक्त तो सदा ही निर्भय होकर आनन्द का उपभोग करते हुए विचरते हैं। हे सर्वरक्षक ! हमारी भी सदैव रक्षा करते रहना। रक्षा करते रहना।

(२६)

ओंकार की गर्जना



तिस्रो वाचा उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः।
हरिरेति कनिक्रदत।।

ऋ० ६। ३३। ४

तिस्रः-तीन
वाचः-ध्वनियां
उत्-ऊंचे स्वर में
ईरते-गूंज रही हैं। मानो
धेनवः-दूधार
गावः-गौएं
मिमन्ति-रम्भानाद करके
अपने बछड़ों को बुला रही हैं।
हरिः-दुःख को हरण करने वाला परमेश्वर, हमारा चित्त चोर
कनिक्रदत्-गर्जता हुआ
एति-आता है, आ रहा है।

तीन ध्वनियां उच्च स्वर से संसार में गूंज रही हैं। मानो दूधवाली गौएं अपने बछड़ों को बुला रही हैं। हरि गर्जता हुआ, दूर से ही पुकार कर अपने आगमन को सूचित करता हुआ आ रहा है।

हे नाथ ! युग–युग पर्यन्त मैंने आपके पवित्र नाम का जाप किया है। आपकी प्राप्ति के लिये कठोर तपस्या की है। विविध–प्रकार

यज्ञों और व्रतों आदि का अनुष्ठान किया है। ज्ञात होता है, मेरी साध सफल हुई। प्रियमिलन की शुभबेला आ गई। प्रियतम! आज तो तेरे शब्दों की पवित्र ध्वनि मेरे कानों में आ रही है। तीन ध्वनियाँ गूंज रही। अ, उ, म्। अ, उ, म्। ओम्। ओम्। ओम्। ओम्। ओम्। ओम्।

ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।
ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।।

जैसे खूंटे से बंधा हुआ बछड़ा बारम्बार रम्भानाद करके अपनी मां गैया को पुकार रहा था। मां के वियोग में व्याकुल हो रहा था। सायंकाल के समय घर लौटती हुई गौमाता ने दूर से ही बछड़े की पुकार को सुना। अपने लाल की पुकार को सुनकर माता गद्–गद् हो गई। पुकार का उत्तर, पुकार से देने लगी। दोनों और से रम्भानाद आरम्भ हो गया। उधर बछड़ा पुकार रहा था। इधर गाय। म्हां ३। म्हां। म्हां ३।। कैसा अद्भुत दृश्य है! प्रेम–पन्थ का, यह कैसा सुन्दर व्यापार है? दोनों ओर एक ही ज्योति का प्रकाश हो रहा है। मानो बेटा पुकार कर कह रहा है– हे मां! तू आ। और मां पुकार कर कह रही है– मैं आ गई। आ गई, मेरे लाल! मैं आ गई। मैं आ गई।

आज तो हमारी भी यही अवस्था है। हम पुकार रहे थे। मां ने हमारी पुकार सुन ली है। वह आ रही है। दूर से अपनी प्यारी मां का आश्वासन हमें मिल रहा है–

ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।
ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।।

हमारा चित्त चोर गर्जता हुआ और आनन्द की वर्षा करता हुआ आ रहा है। आज हमारे सौभाग्य सूर्य का उदय हुआ है।

हे दयानिधे! इस सृष्टि को देखते हैं, तो हमें तो यह भी तीन ध्वनियों का ही एक विस्तृत–रूपक प्रतीत होती है। आपके शुभ–प्रकाश

से ही यह संसार प्रकाशित हो रहा है। आपके भण्डार से ही सब किसी को जीवन मिल रहा है। हे नाथ ! हम उपासकों की भी सुध लेते रहना। प्राकृतिक ऐश्वर्य तो हमें अब भाता नहीं, बस एक मात्र आपकी ही चाह है, आपकी ही लौ लगी है।

ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।
ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओम्, ओ३म्।।

(३०)

तू ही तू है, तू ही तू है



एवा ह्येव एवां ह्यग्ने, एवा हीन्द्र।
एवा हि पूषन्, एवा हि देवाः।।

सा० महानाम्न्यार्चिक मं० १०

हि-सचमुच
एवा-ऐसा
एव-ही है।
अग्ने-हे ज्योतिःस्वरूप !
एवां हि-ऐसा ही है
इन्द्र-हे सबके स्वामिन् !
एवा हि-ऐसा ही है।

पूषन-हे सबके पालक और पोषक
एवा हि-ऐसा ही है।
देवाः-हे दिव्य शक्तियों वाले, हे अनन्तगुण कर्म स्वभाव युक्त महान्‌देव
एवा हि-ऐसा ही है।

जैसा सुना था वैसा ही है। हे अग्ने ! ऐसा ही है। हे इन्द्र ! ऐसा ही है। हे पूषन् ! ऐसा ही है। हे दिव्य ! ऐसा ही है।

प्रियतम ! अन्त में आज हमने आपको पा ही लिया। जैसा सुना था और जैसा पढ़ा था, हे प्रभो ! तू वैसा ही है। तेरा स्वरूप, मनोहर है। तेरी महिमा, अद्‌भुत है। तेरा आकर्षण, अपूर्व है। तेरा आनन्द, सर्वोपरि है। तू संसार का रचयिता है। बल का भण्डार है। आनन्द का स्रोत है। भक्त समुदाय का अन्तिम लक्ष्य तू ही है।

हे ज्योतिःस्वरूप ! तेरी ही ज्योति का प्रकाश, सर्वत्र हो रहा है। चन्द्र, सूर्य और तारागण, तेरे ही प्रकाश से प्रकाशित हैं। तेरी ही ज्योति से अग्नि जलता है। तेरी ही गति से वायु बहता है। संसार का अंग–प्रत्यंग तुझसे ही जीवन एवं गति प्राप्त कर रहा है।

हे सर्व–ऐश्वर्य–सम्पन्न ! तू ही सबसे बड़ा है। पूज्यों का पूज्य, तू ही है। राजाओं का भी राजा, तू ही है। तू सर्वश्रेष्ठ है। तू हमारा उपास्य–देव है। तू ही हमारा जीवनाधार है। देव तुझे पाकर, आज हमने सब कुछ पा लिया है। सब कुछ पा लिया है।

हे सबके पालक और पोषक ! सब अवस्थाओं और सब काल में, एक मात्र तू ही हमारा रक्षक है। तेरी कृपा से ही हम आज सफल मनोरथ हुए हैं। युग–युग से ही तू ही हमारी सहायता करता आ रहा है। नाथ ! अब हम सदा के लिये आपके ही होकर रहना चाहते हैं। आपकी आनन्दमयी गोद में आकर जो सुख हमें मिला है, हे प्रभो ! हमें कभी भी उससे वंचित न करना।

हे भुवन–भावन ! जो कुछ हम चाहते थे, वह आज हमें मिल गया है। आप मिल गये हैं, तो बस, सब कुछ मिल गया है। आप को पाकर हमारी कामनाओं का अन्त हो गया है। हमारी सीमितताओं का अन्त हो गया है। हमारे कर्म–फलों और कैवल्य को हमने पा लिया है। प्रभो ! यह मेरी अनुभूति है। सचमुच ऐसा ही है। तेरी जय हो। तेरी जय हो। तेरी जय हो। जय हो। जय हो। जय हो। तेरी सदा ही जय हो।

हे देव ! तेरी अनन्त महिमा का, तेरे अनन्त गुणकर्म और स्वभाव का, कोई अन्त नहीं है। तेरा कोई ओर–छोर नहीं हैं। तू दिव्य है और तेरे खेल भी सब दिव्य हैं। तू अन्नदाता है। तू जीवनदाता है। तू सुखदाता है, तू ज्ञानदाता है। तू मोक्षदाता है। तू ज्ञानमय है। तू अमृत है। तू ही तू है। तू ही तू है। तू ही तू है।

(प्रातःकाल सोकर उठने के समय की प्रार्थना)

आज का दिन शुभ हो



प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगंपूषणं ब्रह्मणस्पतिं, प्रात। सोममुत रुद्रं हुवेम।। ऋ० ७। ४१। १

प्रातः-प्रभातकाल में
अग्निम्-ज्योतिःस्वरूप
प्रातः-और उसी समय
इन्द्रम्-ऐश्वर्य के स्वामी को
हवामहे-हम बुलाते हैं।
प्रातः-प्रभातकाल में
मित्रा-सबके मित्र
वरुणा-प्राप्त करने योग्य
अश्विना-शक्तिशाली
प्रातः-और प्रातः समय ही
भगम्-सबके सेवनीय
पूषणम्-सबके पोषक
ब्रह्माणः-ब्रह्माण्ड के,
पतिम्-स्वामी को
प्रातः-तथा प्रभातकाल में ही
सोमम्-आनन्ददाता
उत-और
रुद्रम-न्यायकारी परमेश्वर को
हुवेम-हम बुलाते हैं।
चाहते हैं।

हम उपासक लोग प्रतिदिन प्रभातकाल में, हे ज्योतिस्वरूप ऐश्वर्यदाता, सर्वहितैषी, प्राप्त करने योग्य, अद्भुत शक्तियों के स्वामी, सबके उपास्य, जगत के पालन कर्ता, ज्ञानदाता और संसार के स्वामी,

आनन्दस्वरूप न्यायकारी आदि अनन्त नामों वाले और अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले परमेश्वर ! आपको अपने जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिये बुलाते हैं।

हे ज्योतिःस्वरूप परमपिता परमात्मन् ! एक रात और बीत गई। पुनरपि सूर्य भगवान् का उदय हो रहा है। आपकी कृपा से, अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिये, हमें आःज एक दिन और मिला है। प्रभुजी ! हम एक बार फिर अपने जीवन–संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिये कर्मक्षेत्र में जा रहे हैं। नाथ ! हमारा पथ–प्रदर्शन करना, सहायता करना, रक्षा करना। हे देव ! हमें नव–जीवन प्रदान करो। आगे बढ़ने का और ऊपर उठने का अदम्य उत्साह प्रदान करो। आज तक यत्किंचित्, जो कुछ भी सफलता हमें मिली है, वह सब आपकी ही कृपा का प्रसाद है। आज फिर हम आपके द्वार पर आये हैं, हमें आशीर्वाद दो।

नाथ ! आप तो शक्ति के स्रोत हैं, ज्ञान के भण्डार हैं, धनों के आगार हैं, आप क्या नहीं हैं? और कहां नहीं हैं? आपके गुण, कर्म और स्वभाव अनन्त हैं, आपकी महिमा अपरम्पार है। दयामय! हमारी आशा पूर्ण करना।

हे जगदीश्वर ! हम तो आपके द्वार के सनातन भिक्षुक हैं। आप सनातन दाता हैं और हम सनातन–भिखारी। भगवन् !.क्या कभी हमारे इस भिक्षुक–जीवन का अन्त न होगा? हे जीवन–धन! आज तो हमारे इस भिक्षुक जीवन का अन्त कर दो। हमारी त्रुटियां दूर कर दो। हमारे अभाव दूर कर दो। हमारी सीमितताओं का अन्त कर दो। हमारे हृदय में जल रहे राग–द्वेष और भोग–विलास के दावानल को शान्त कर दो। हमें दिव्य सम्पदा से परिपूर्ण करो। जो उत्तमोत्तम गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे हमें प्रदान करो और हमारे इस पाप–ताप–मय

जीवन का अन्त होने दो। क्षण भंगुर विषय–भोग के मौज मजे का अन्त होने दो।

हे नाथ ! जिस प्रकार इस काली–कलूटी रात का अन्त इस समय हो रहा है, उसी प्रकार हमारी दुःख रजनी का भी अन्त कर दो। जिस प्रकार आकाश में भगवान् भास्कर का उदय हो रहा है, उसी प्रकार हमारा सौभाग्य सूर्य भी उदित कर दो।

आपकी कृपा से हमारा जीवन शुद्ध, शान्त और उन्नत बना रहें। दिन प्रतिदिन, अधिकाधिक शुद्ध, शान्त और उन्नत होता चला जाये। हे कृपानिधान ! आपकी कृपा से हमारा उदय हो, आज का दिन हमारे लिये शुभ हो। आज का दिन हमारे लिये शुभ हो।

(रात को सोने के समय की प्रार्थना)

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु



यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

यजु० ३४। १

यत्-जो
जाग्रतः-जागृत अवस्था में
दूरम्-दूर तक
उदैति-चला जाता है।
तत् उ-और वही
सुप्तस्य-प्रसुप्त अवस्था में भी
तथैव-उसी प्रकार दूर—दूर
एति-चला जाता है,
तत्-वह
दूरंगमम्-दूर दूर जाने वाला
ज्योतिषाम्-प्रकाशयुक्त पदार्थों का भी
एक-एक मात्र
ज्योतिः-प्रकाशक
मे-मेरा
दैवम्-दिव्य शक्ति से युक्त
मनः-मन
शिवसंकल्पम्-उत्तम संकल्पों वाला
अस्तु-होवे।

हे परमात्मन् ! जागृतावस्था में भी और प्रसुप्तावस्था में भी, सदैव

चंचल बना रहने वाला, दूर–दूर जाने वाला, प्रकाशकों का भी प्रकाशक और अद्भुत शक्तियों से सम्पन्न, मेरा मन सदैव शिव–संकल्पों से युक्त रहे।

हे दीनबन्धो ! मेरा मन बड़ा चंचल हैं। लाडले बेटे के समान यह सदा ही मुझे नाना प्रकार से तंग करता रहता है। कहना नहीं मानता। शान्त होकर नहीं रहता। कुछ न कुछ खट–पट करता ही रहता है। दूर–दूर तक भागा–भागा फिरता रहता है। कभी आकाश में विहार करता है, कभी पाताल में जा पहुंचता है। कभी बादलों से खेलता हैं और कभी सागर की तरल–तरंगों से। वायु से भी बढ़कर, विद्युत से भी बढ़कर सूर्य की किरणों से भी बढ़ कर, तेज इसकी गति है।

हे देव ! जैसे इसकी गति तीव्रतम है, वैसे ही इसका स्वभाव भी बड़ा विलक्षण है। इसके कृत्य बहुत ही अद्भुत हैं। गहन और गम्भीर समस्याओं को सुलझाता है। गुप्त रहस्यों को प्रगट करता है। ऊपर उड़ता है, तो बहुत ऊपर पहुंच जाता है। नीचे गिरता है, तो बहुत अधिक नीचे जा गिरता है। हे घट–घट के वासिन् ! आपकी कृपा से मेरे मन की चंचलता दूर हो जाये। किसी प्रकार का राग–द्वेष, किसी प्रकार के दूषित विचार और किसी प्रकार के अभद्र–भाव, मेरे मन को कलुषित न करें। असम्भव कल्पनायें करने, काल्पनिक तोड़–फोड़ करने और पापपूर्ण वासनाओं को प्रश्रय देने की कुटेव, मेरा मन छोड़ दे। यह सदैव शान्त और निर्मल रहकर आपके स्वरूप का ही चिन्तन सदा किया करे। आपके पवित्र ज्ञान, वेद का ही मनन निरन्तर किया करे।

हे करुणामय ! आपकी कृपा से मेरा मन पूर्णतया निरुद्ध हो जाये। सर्वथा मेरे अधिकार में आ जाये। मन की चंचलता के कारण, मेरी शक्ति का जो क्षय और अपव्यय जब–तब होता रहता है, प्रभुजी!

वह न हो। मेरा मन अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ सदैव आपकी उपासना और पुण्यकर्मों में ही संलग्न रहे। हे परमात्मन् ! मेरा मन बुरे-बुरे विचार रखने वाला न हो, बुरे स्वप्न देखने वाला न हो।

हे सर्वरक्षक परमेश्वर ! अपने दैनिक कार्यों में जान कर अथवा अनजान में यदि मैनें कोई दुष्कर्म किया हो, तो मैं उसके लिये क्षमा-प्रार्थी हूं। मैं अपने जीवन को शुद्ध, सात्विक, वैदिक और उन्नत बनाने का यत्न कर रहा हूं। अपने सब शुभ कार्यों में, मैं आपकी सहायता चाहता हूं। प्रभो ! आज मेरे जो कर्तव्य अपूर्ण रह गये हैं, उनको मैं कल पूर्ण करूंगा। अब मैं आपकी आनन्दमयी गोद में कुछ काल के लिये, विश्राम प्राप्त करना चाहता हूं। आपकी कृपा से मुझे अच्छी और गहरी नींद आये। मुझे अच्छी और गहरी नींद आये।

प्रार्थना-भजन-संग्रह



(१)

नमो वेद विद्या के प्रकाश कर्ता।
नमस्कार अज्ञान के नाश कर्ता।।
नमस्कार बल बुद्धि के देने वाले।
नमस्कार दु:खों के हर लेने वाले।।
नमस्ते निरंजन अविद्या विनाशक।
नमो सच्चिदानन्द घट–घट व्यापक।।
नमस्ते निराकार निर्दोष नायक।
नमस्ते परम मित्र सबके सहायक।।
निराकार निर्देव मुक्ति के दाता।
तुम्हें है नमस्कार सायं व प्राता।।
नमो नाड़ी व नस के बन्धन से बाहर।
नमो सर्व आधार करुणा के सागर।।
यह है मांगता आपका दास 'केवल'।
कि शुद्धि हो हृदय में बुद्धि हो निर्मल।।

(२)

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।
स्वांसों के स्वर झंकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।
आकाश हिमालय सागर में, पृथ्वी पाताल चराचर में।
यह मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे ज़गदीश हरे।।
जब दया दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती लहरांती है।
इस आस पै नर उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे।।

(३)

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।।
दल बल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर।
तो देखते न रहना, झट आके बचा देना।।
सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊं।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना।।
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तों फिर सच करके दिखा देना देना।।

(४)

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है।।
ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल तेज धारी, ओ३म् करुणाकन्द है।।
ओ३म् सबका पूज्य है हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओ३म् के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।
ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह ओ३म् हमको मुक्ति तक पहुंचायेगा।।

(५)

हे जगत् स्वामी प्रभुजी ! भेंट धरूं क्या मैं तेरी।
माल नहीं मेरे सम्पत्ति नाहीं, जिसको कहूं मैं तेरी।।
इस जग में हम ऐसे विचरे, जोगी करे ज्यों फेरी।।
धन–जन–यौवन अपना मानें, मूरख भूला भारी।
तुझ बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं विचारी।।

यह तन यह धन होवे न अपना है सब मोल तुम्हारा।
जब चाहे तब तू ले लेवे, नाहीं कुछ जोर हमारा।।
तुम्हारे दर का भिखारी मैं स्वामी लाज तुम्हें हैं भारी।
चरण शरण निज अर्पण करके देओ भक्ति बिन देरी।।

(६)

तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं।।
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं।।
हूँ शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊं मैं।। तेरे०
मेरे पाप कर्म ही तुझसे प्रीति न करने देते हैं।
कभी जो चाहुं मिलूं आपसे रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊं मैं।। तेरे०
है तू नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दे ज्ञान का, होश में आऊं मैं।। तेरे०
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर संभालूं मैं।
चरणों में जा बैठ आपके गीत प्रेम के गा लूं मैं।
जीवन प्यारे 'देश' का अमर बनाऊं मैं।। तेरे०

(७)

हे आनन्द घन! चहुं ओर सुख की वर्षा करो।
पाप ताप सब दूर नसावो।
फेरो कृपा दृग कोर।। सुख की०
दूर करो शुभ द्युति से अपनी।
मोह तिमिर घन घोर।। सुख की०
सुरभित शीतल धर्म पवन हो।

उपवन छवि चित्त चोर।। सुख की०
व्रतपति व्रत हम ब्रह्मचर्य का।
पाल सकें सुकठोर।। सुख की०
मातृ-भूमि सुख सम्पत्ति साजे।
विनती यही कर जोर।। सुख की०

(८)

हे प्रेममय प्रभो ! तुम्हीं सबके आधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार-बार हो।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।
सन्देश देश-देश में, वेदों का दें सुना।
समभाव और प्रेम का सबमें प्रचार हो।।
असहाय के सहाय हों, उपकार हम करें।
अभिमान से बचें हृदय निर्भय उदार हो।।
फूले फले संसार में यह रम्य वाटिका।
कर्तव्य का अपने सदा हमको विचार हो।।
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें।
सेवा में मातृभूमि की तन मन निसार हो।।

(९)

मैया बरस बरस रस वारी

बूंद बूंद पर तेरी जाऊं बार-बार बलिहारी।।
नदी सरोवर सागर बरसे लागी झड़ियां भारी।
मोरे अंगना क्यों न बरसे मैं क्या बात बिगारी।।
तू बरसे मैं जी भर नहाऊं दोनों भुजा पसारी।
नयन मूंद कर नाचूं गाऊं, अपना आप बिसारी।।

(१०)

प्रभु जी मेरे तुम ही एक आधार।

दुःख विनाशक सुख के दाता सबके पालन हार।
शरण गहूं प्रभो ! जाय कहां मैं कोई न पूछनहार।।
तेरा ही मन्त्र जपूं निशिवासर चरणन में सिर डार।
परम कृपा कर दुखिया मुझको अब तो लीजे उभार।।
कर स्वीकार चरण में तेरा भक्ति भरा उपहार।
दया करो प्रभो ! दीन हूं मैं तब द्वारे रहा पुकार।।

(११)

यज्ञ–रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।
वेद की बोलें ऋचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म–मर्यादा चला कर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि सब करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की।
भावनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नार की।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे।।

(१२)

तुम मेरी राखो लाज हरि।

तुम जानत सब अन्तर्यामी करनी कछु न करी।
औगुण मोसे बिसरत नाहीं पल छिन धरी धरी।
सब प्रपंच की पोट बांधकर अपने शीश धरी।।
दारा सुत धन मोह लियो है, सुध बुध सब बिसरी।
'सूर' पतित को वेगि उबारो मेरी नाव भरी।।

(१३)

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही इक नाथ हमारे हो।।
जिनके कुछ और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो।।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो।।
भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो,
हमरी सुधि नाहीं बिसारे हो।।
उपकारण को कछु अन्त नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज ! महा महिमा तुमरी,
समुझै बिरले बुधवारे हो।।
शुभ–शान्ति–निकेतन प्रेम निधे,
मन मन्दिर के उजियारे हो।।
यही जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरी,
केहि के अब और सहारे हो।।

प्रो३म् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयान्ताम, पावमानी द्विजानाम। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति, द्रविणम् ब्रह्मवर्चसं मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्"

सत्‌चित तथा आनन्दमय् सर्वज्ञ सतावान जो।
पेरक प्रकांशक सर्वव्यापक, दिव्यशक्ति निधान जो।।
पिता अभ्यदाता विधाता जो महान–महान है।
करते वरण के योग्य उनके तेज का हम ध्यान है।।
वह विभु हमारी बुद्धियों में, विमल, ब्रह्मविल भरे।
तन मन वचन से नित्य ही, सन्मार्ग पर प्रेरित करे।।

वेद माता

हे वेद माता हे ज्ञान जननी,
जीवन को मेरे उज्जवल बनाना।

१. तेरा नाम वरदा, तेरा नाम सुखदा तुझे
पावमानी कहते है ज्ञानी तुझे।
तू ही श्रुति है तुझ से मति है,
ज्योर्तियी मुझको 'तू' मां बनाना।

२. तेरी सच्ची पूजा है तुझ को समझना,
तुझ को समझना अनुकरण करना,
तुझको मैं समझू तुझको मैं जानूं,
मुझे दान मेघा में उन्नत बनानां हे
वेद माता ....

३. अमर ज्योति तेरी बिखरी चहूं देश में है
मगर चक्षु मेरे खुलते नहीं है
अज्ञान पर्दा जो छाया हुआ है
हटाकर इसे ज्ञान तथ्य दिखाना
हे वेद माता...............................

४. पाखंड तमसे भव जो भरा है
कहीं ज्ञान दीपक जलता नहीं है
सबको दया मयी दे सम्य दृष्टि
ऋचा के रहस्यों का बेधन कराना
हे वेद माता.................................

५. तुम में कमी क्या है हे सत्य–पूर्णा
परम पूर्व प्रिय रचना तुम्ही हो
परम सत्य पाने की दिशा अब दे दो
मेरा दिव्य जीवन तू ही बनाना
हे वेद माता.................................

६. तेरा सत्य सेवन तेरा ही प्रसारण
तेरी सत्य निष्ठा तम का निवारण
तेरा पठन पाठन ही मेरा व्रत हो
मुझे प्रेरणा दे व्रती तू बनाना
हे वेद माता.................................

मंगल गीत

१. आज मंगल गान गाएं २
आज मंगल गान गाएं
यज्ञ सुन्दर हो रहा है
सुरभिमय नम हो रहा है
क्यों न सुरभित इस सुरभि से
विश्व को सुरभित बनाएं
आज मंगल.................................

२. आज मिल रही चहुं ओर बधाई
कैसी सुन्दर बेला आई
फूल सुन्दर खिल रहे हैं
क्यों न प्रेम विभोर होकर

हम सब मिलें खुशियां मनाएं
आज मंगल.....................................

३. सदगुणों से कर सुशोभित
चहुं दिशाओं को गुजाएं
हम ऋषि का ऋण चुकाएं, मानव को
हम मानव बनाएं
आज मंगल.....................................

४. पूर्ण हो सब कामनाएं
दूर हों सब आपदाएं
पूर्ण प्रभु की पूर्ण करूणा से
सभी लोग आनन्द पाएं
आज मंगल.....................................

मन का बर्तन

सांझ सवेरे मन का बर्तन मांज डालो जी
कि बर्तन मांज डालो जी,

१. यह बर्तन तेरा बहुत है मैला,
काम क्रोध का राग कसैला
मोह मोरचा लागा बर्तन मांज डालो जी
कि बर्तन मांज डालो जी

२. यह बर्तन तेरा बहुत है भारी
मांज सके ना मांजन हारी
कुदन कर दे शरण तिहारी
कि बर्तन मांज डालो जी

३. नियम संयम का झूना बनालो
इन्द्रिय दमन की राख बना लो
दे के ओम नाम का रगड़ा बर्तन
मांज डालो जी कि बर्तन
मांज डालो जी,

४. जब यह बर्तन चमके तेरा
दूर होवे अज्ञान अंधेरा
फिर पाएं प्रभुजी फेरा कि बर्तन
मांज डालो जी कि बर्तन मांज डालो जी

यज्ञ के उपरान्त

धन्यवाद प्रभु आपका
प्यार भरा दिन आया है
हम सबको यह आज का
शुभ अवसर दिखलाया है

१. हे परमेश्वर कृपा आपकी
सचमुच बडी निराली है
मन उपवन में कलिया महकीं
झुमी डाली डाली है
चेहरा पर हैं रौनके
मन सबका हर्षाया है
धन्यवाद..

२. सब मिलकर सत्संग में बैठे
भाग्य सभी के जागे हैं
ऋषियों के संदेश को जन–जन ने अपनाया है
धन्यवाद..

३. गूंज रही है अमृत वाणी
नर–नारियों के कानों में
धर्म कार्यो मे लगन बढ़ी
और रूचि बढ़ी विद्वानों में
नर जीवन के सार को
ऋषियों ने समझाया है
धन्यवाद प्रभु आपका प्रेम–भरा दिन आया है।

४. मिलकर तेरी महिमा गाएं
सदा करो कल्याण प्रभु
थके दिलों में श्रृद्धा भक्ति
ऐसा दो वरदान प्रभु
पथिक तेरे दरबार में
सबने शीश झुकाया है
धन्यवाद..

यज्ञ के उपरान्त

स्वामी दिव्यानन्द जी की लेखनी से

यज्ञ सफल हो जाएं मेरे भगवान
यज्ञ सफल हो जाए।

१. श्रृद्धा से हैं यज्ञ रचाया
वेदी को भी खूब सजाया
पवन शुद्ध हो जाएं मेरे भगवान्
मेरा यज्ञ सफल हो जाए।

२. घृत सामग्री शुद्ध चढाना
मेवा चंदन मिष्ट मिलाया
रोग शोक मिट जाएं मेरे भगवान
यज्ञ सफल हो जाए।

३. यज्ञ सुगंधि जहां भी जाए।
जीव भाग को सुख पहुंचाए
सबके मन को भाए मेरे भगवान्
यज्ञ सफल हो जाए।

४. श्रेष्ठ कर्म है यज्ञ बताया
यथा शक्ति में जो कर पाया
ब्रह्मापर्ण हो जाए मेरे भगवान्
यज्ञ सफल हो जाए, यज्ञ सफल हो जाए

५. राग द्वेश का दोष मिटा दो
प्रेम भाव का कोष बढ़ा दो
यज्ञ योग बन जाए मेरे भगवान्
यज्ञ सफल हो जाए,
यज्ञ सफल हो जाएं।

६. यज्ञ यज्ञपति को मिल जाए
पूर्ण कामना तब हो जाए
द्विव्याशीष दिलाए मेरे भगवान्
यज्ञ सफल हो जाए।

मेरा ब्रह्म

मेरा तो ब्रह्म परमेश्वर जमाने से निराला है

मेरा............ तो ब्रह्म परमे......................श्वर
जमाने......................से निरा.................ला है
सलोना है रसीला है दिव्य वह तेज वाला हैं
ना गोरा है ना काला है. अरे आनंद वाला हैं

१. कभी निद्रा मे हर्षाता
कभी जागृत में मन भाता
कभी दर्शन दिखाने को
मुझे अनुभव कराने को
निराला ढंग निकाला है
मेरा तो ब्रह्म...................................

२. तुम्हें दीनों मे मैं पाऊं
.देखू धनिको में हर्षाऊं
तुम्हारी जगत लीला ने
अजब धोखे में डाला है
मेरा तो ब्रह्म...............................

३. तुम्हें मैं भूल तो जाऊं

मगर भूले नहीं बनती

तुम्हारी सोमधारा में तुम्हें पाऊं

निकट पाऊं

मेरा तो ब्रह्म..............................

४. भक्ति जब रंग लाती है

तुम्हें हर जीव में पाती है

प्रेम ने प्रेम पहचाना

तो बाकी सब नीरस पाती है

मेरा तो ब्रह्म परमेश्वर......................

प्रेम के अपने भाव

ऋषि टंकारा वाला

मुझे टंकारा वाले ने,

मूल शंकर निराले ने

ऋषिवर वेद वाले ने

पिला कर ज्ञान का प्याला

बहा दी सोम की धारा

जला की ज्ञान की ज्वाला

बना दिया मन ही शिवाला

मिला दिया सत्य शिव आला

पिला दी वेदों की हाला

बनाया आर्यों को मतवाला

बना दिया जग ज्ञान वाला

ऋषिवर वेद वाले ने......................

१. वेद का दर्शन मेरा भगवान्

सभी अज्ञान हरता है

प्रभु सुमिरण अरे ओ मन सभी दुःख दूर करता है

रहें बैठे वेद द्वारे

मिलें आनन्द सुख सारे

निर्मल मन में आके रहना

हरदम ही करूं ब्रह्म चितन्

मुझे टंकारा वाले ने

मूल शंकर निराले ने

२. वेद दर के बनें सेवक

दुखी जन की सेवा निभाने को

मिले सत्संग और भक्ति

प्रभु गुणगान गाने को

रहें बैठे वेद द्वारे

मिले आनन्द सुख सारे

मुझे टंकारा वाले ने

प्रेम का भाव

ओ३म् रस

ओ३म् रस है प्यारा प्यारा

ओ३म् रस है न्यारा न्यारा

ओ३म् के तप से तप जाओं

ओ३म् के जद से फिर नहाओ

ओ३म् को झरना तुम बनाओ

१. ओ३म् रस जब झर झर झरता है

यह सारे कल्मण हरता है

२. ओ३म् की नाव पे होके सवार

पहुंचों ह्वदया काश के पास

जरा सा छू लोगे आकाश

छूट जाएंगे अज्ञान के पाश

प्रेम से देखोगे प्रकाश
असंख्य जन्मों से थी तेरी प्यास
ओ३म् रस.................................

३. प्रभु जिस जीव को चुनता है
मन में उसके आनन्द भरता है
ससीम के घर से निकल आओ
असीम मे स्थान तुम पाओं
प्रभु के दिल में घुसकर तुम
आनन्द के कोष में छुपकर तुम
खुद के जीवन पर हर्षाओ
ओ३म् के रस में डुबकी लगाओ

४. ओ३म् का बिस्तर तुम पाओ
ओ३म् की चादर ओढ़ आओ
ओ३म् रस प्यारा ही प्यारा
ओ३म् रस में छिपा सच्चा सुख सारा
प्रभु प्रेम का रस
प्रेम का प्रभु

वेदना के क्षण

कैसे करूं भव पार
पिता मुझे अपनी शरण दो
तेरी बालक निपट अजान
कि अब मेरी बांहग हो तुम
अंतरा.............................

१. माया की यह गहरी जलधि
टूटी नैया थामो जल्दी
डूब ना जाऊं आओ जल्दी
सुनलो करूण पुकार

पिता मुझे अपनी शरण दो

२. जब–२ मारे संसार थपेडे

आ जाऊं नस तेरे नेड़े

तेरी गोद मे शांति अपार

पिता मुझे अपनी शरण दो

अब हल्का सा दे दी दुलार

पिता मुझे अपनी शरण लो

३. दयामय जीव का है यह खोखा

चाहे उपर सुन्दर अन्दर थोथा

गवाक्ष के खोल दो अब तो द्वार

सुन लो मेरी मुनहार शीतल पवन की

आए बयार, पिता मेरी बांह पकड़ लो

कैसे करूं........प्रेम की विह्वलता।

दोहे

१. ओ३म् नाम अति मीठा है

कोई गाकर देख ले

आ जाते प्रभु झम झम

मन के रंग मे धुन बजा कर देख ले

२. पिंजरे का पंछी प्यासा

पिंजरे को देता पानी

है इसमें तेरी नादानी

अब छोड़ दे तू मनमानी

यह देह है आनी जानी

प्रेम की विनती

प्रभु तुमसे करूं मै प्यार

कि जीवन सुखद् बने

मन मे तेरी झकार

कि साज से सुर उमरें।

१. जब–२ आएं, कष्टो की घडियां

मन तब जोड़े तुझ से ही लडियां

दुःख में भी पा लूं सार

बन जाऊं तेरा परिवार

कि जीवन सुखद बने

प्रभु...

२. जब–२ बरसें सुख के बादल

तब भी थामूं तेरा आंचल

आनन्द की बरसे फुहार

मानों मोक्ष के खुल जाएं द्वार

प्रभु तेरा प्यार मिले

३. जब–२ आएं जुल्मो की आधीं

शांति दूत सा बन कर गांधी

अहिंसा से पालू साम्राज्य

अन्याय न हो बार–बार

यही चाहूं उपहार

कि प्रभु तेरा प्यार मिले.

४. शांति से जब न बात बने तो

जोश भरे जैसे झांसी की रानी

जुल्म भरे तब सांस

ऐसा दो विश्वास

कि जीवन सुखद बने

प्रभु तुमसे करूं अब प्यार

कि जीवन सुख से भरे।

५. अहम् का जब–जब नाचे नाग
मर्दन करना तुरत् तुम नाथ
तेरा सिर पर पाऊं हाथ
हर पल रहूं अब तेरे साथ
कि तेरा प्यार मिलें
प्रभु तुमसे करूं मे प्यार
कि तेरा साथ मिले।

६. जब–जब फेरे माया फेरा
तब तुम डालो मन मे डेरा
करो कुछ ऐसा उपाय
करू जीवन तुम पर न्यौछार
ऐसा दो उपहार कि तेरे मन में रहूं
प्रभु तुमसे करूं मै प्यार
कि जीवन सुखद बने।

प्राण हंस

उड़ जा रे हंस अमर बन में
दुनियां में किसी का कोई नहीं

१. दशरथ के साथी हजारों थे
जब मरण हुआ तो कोई नहीं
उड जा रे हंस अमर वन में
दुनिया में किसी का कोई नहीं

२. राम के साथी हजारों थे
जब बन मे गए तो कोई नहीं
उड़ जा रे हस अमर बन में

३. सीता की सहेली हजारों थी
जब हरण हुआ तो कोई नहीं
उड़ जा रे हंस अमर बन में
दुनियां में किसी का कोई नहीं

४. लक्ष्मण के साथी हजारों थे
जब शक्ति लगी तो कोई नहीं
उड़ जा रे हंस अमर वन में
दुनिया में किसी का कोई नहीं

अकाल की भीषणता

प्रकृति का वीभत्सिक संताप
या कह लो इसे सुर इन्द्र का श्राप
आतंक इसका सबके हृदय में व्याप्त
मेरे विचार से तो इतना संकेत ही पर्याप्त
कहिए क्या आपने जाना?
अकाल ....
जी हां आपने सटीक पहचाना
यह अकाल की कहलाता हैं और कुछ नहीं
शब्द है छोटा किन्तु इसका रूप तुच्छ नहीं
वृष्टि का अत्यधिक अभाव
सूर्य का नितान्त दबाव
इन्हीं कारणों जन्में अकाल
कह लो इसे दैत्य या कहो चांडाल
अत्यधिक दुर्दशा वसुधा की
वेदना मनुष्य को पिपासा व क्षुद्धा की
मैंने मन ही मन कहा–
हे धरती
तू क्यों सिसकती
जिसने दिया यह कष्ट
वही करेगा इन्हें नष्ट।
खेत खलिहान हरे भरे
चिल चिलाती धूप से भरे
इक रूचिर नन्हीं कली

प्रति कूलता के कारण नहीं खिली
इसी प्रकार जीवन अंकुर का
उत्साह पूर्ण पर क्षण भंगुर था
फूल पौधे पनपने में हुए असमर्थ
बोले हे जगदीश।
ये कैसा अनर्थ
न मिलने पर चारा घास
त्यागी पशुओं ने भी श्वास
पादप जो पहले थे सिंचित
रह गए जल से वंचित
फूल पत्ते उन पर है न किंचित
यह देख होता चित्त अति दुखित
कृषक के दुखों का तो पारावार नहीं
उसकी नैया है मझधार पार नहीं
अकाल ने लूटली उसकी सम्पूर्ण सुख समृद्धि
उसके संकटो व विपदाओं की वृद्धि ही वृद्धि
सर्व व्यापी है बुमुक्षा व पशुओं और मनुष्यो की मृत्यु
विपदाओं के चक्र व्यूह में संघर्ष करता बेचारा कृषक रूपी अभिमन्यु
नहीं बरसे निष्ठुर बादल
छलका सब चक्षुओ से जल
गिरा वो नेत्रजल भूतल
मेरे हृदय मे जागा एक भाव प्रबल हे मेरे मन मन्दिर में रहने वाले कृष्ण क्या यह व्याकुल वसुन्धरा शांत करेगी
इन्हीं अश्रुओं से अपनी तृष्णा अब पूर्ण करो मेरी आकांक्षा करो पीड़ित भारत की रक्षा

रचयिता
अनुराग गुप्ता

ओ३म् कवच

ओ३म् कवच बन जाए
मेरा ओ३म् कवच बन जाए
असुर कभी न घुसने पाऐ
भ्रम और भय मिट जाये
मन में शान्ति का शासन हो,
ब्रह्मानन्द समाये।

रोम–२ में रस जाए ऐसा
रंग रंग मे रंग लाये।
सबमे उसका रूप निहारूं
ज्ञान नयन खुल जाएं

यम नियमों का नित पालन हो
अचलासन लग जाए
प्राणों पर पूरा संयम हो
हृदय कमल खिल जाए

जाग्रत में भी लगे समाधि
साधना ऐसी बन जाए

दुख भी मुझे प्यारे है सुख भी मुझे प्यारे है
छोड़ूं में किसे भगवान् दोनों ही तुम्हारे है
दुख चाहे न कोई सब सुख को तरसते हैं
दुख में सब रोते है सुख मे सब हसते है
सुख मिलते है अनेक जिन्हे दुख भी सहारे है
छोड़ू मैं किसे.......................................

सुख दुख ही तो जीवन की गाड़ी को चलाते है
सुख दुख ही तो हम सबको इंसान बनाते है
संसार की नदिया के दोनों ही किनारे है
छोड़ूं मैं किसे.......................................

मैं कैसे कहूं भगवान मुझे ये दो या वो दो
ये तो मरजी है तेरी, मरजी से तुम दे दो
मैने तो तेरे आगे बस हाथ पसारे है
छोड़ू मैं किसे..

सुख में तेरा शुक्र करूं, दुख में फरियाद करूं
जिस हाल में तू रक्खे उस हाल में याद करूं
तेरी याद में दासी ने दिन रात गुजारे हैं

अहंकार

नितान्त मेंधावी हो या हो पंडित
चाहे हो सम्पूर्ण कलाओं के कौशल से मंडित
रूपवान हो, बलवान हो जो भी हो
वसन हों, सम्पदा हो चाहे उसकी
हीरे मोतियो से जड़ित
धन समृद्धि वैभव का चाहे
हो रहो हो उसके सदन सिंधु आलोड़ित
सम्प्रति तो है यह सिन्धु
कल होगा यही मात्र बिन्दु
यदि किया उस रूपवान बलवान
धनाढ़य मेधावी जन ने दंभ किंचित
क्षण भर में कुपित विधाता करे उसको
नष्ट भ्रष्ट, दन्डित और खंडित
इसलिए ऐ जन मूढ़।

फिर क्यों न डरे काल से, क्यों यह दर्प निकाला है मातृगर्भ से केवल मातृभूमि मर कर गर्व।

रचयिता
अनुराग गुप्ता

प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है
सारे ब्रह्माड़ का जीवन आधारा है
तू है सुखो का दाता, तू है भव सागर त्राता
भक्तो को पार लगाता—२

१. पिता तू हमारा है। प्रभु............................
कण कण मे तू है समाया
तेरी है सब में छाया
किसी न ना पार पाया—कैसा तू
नजारा है। प्रभु..............................

२. जग को बनाने वाला बिगड़ी बनाने वाला
दुखड़े मिटाने वाला पिता तू हमारा है
सारे ब्रह्माड़ का जीवन आधारा है

३. सुखमय संसार रचाया वेदो का ज्ञान कराया
प्रभु तेरा..............................

सारे ब्रह्मांड का जीवन आधारा है
तेरे मैं द्वार आया—२
प्रभु प्रियतम प्यारा है प्रभु..................................

काठ की माला

जब तलक तू हाथ मे मनका न मनका लाएगा
तब तलक इस काठ की माला से क्या फल पाएगा

१. भूलकर अजको अजा का आज तक चेरा रहा
क्या इसी पाखंड से परमात्मा मिल जाएगा

२. प्रेम का जल दे रहा परिवार के आराम में
फल नहीं देगा किसी दिन फूल यह मुरझाएगा

३. जब तूझे भाती नहीं ओरो की भलाई तो बता
फिर तुझे संसार सारा किस लिए अपनाएगा

४. चाह की चिंगारी से चौके चैन फिर चित्त को कहां
देख धरकर आग पर पारा कहीं ठहराएगा
५. देखता रहता है तू मसनूई थियेटर रात दिन
बोले बहुरंगे रंगीले गीत कब तक गाएगा
६. दान दानों को न देकर नाम का दानी बना
भोग के भूखे बता वहां जाके तू क्या खाएगा
७. कंठ की छड़–२ सुनेगे अंत में सब घर के लोग
उस घड़ी सर्वस्व खोकर आगे जा पछताएगा।

वरदाता

वरदाता वरदान मिले
सद्बुद्धि सदज्ञान मिले

१. तुमको हम रक्षक मानें
कण–२ में व्यापक जाने
सत्संग संघर्ष की राहों में
अपना पथ–प्रर्दशक माने
जीवन पथ आसान मिले
सदबुद्धि सदज्ञान मिले

२. तेरी लगन कभी छूटेना
प्यार का नाता टूटे ना
दुःख संकट जितने आएं
तेरा दामन छूटे ना
भक्ति रस का पान मिले
सद्बुद्धि सदज्ञान मिले

३. ज्ञान के चक्षु खुल जाएं
मन की कुटिलता मिट जाएं
शिव संकल्प उठे मन में

दुर्गुण सारे घुल जाएं
संतापो से त्राण मिले
सदबुद्धि सदज्ञान मिले

४. वैदिक पथ अनुगामी बनें, सत्य नाम के नामी बने
यश वैभव भरपूर मिले, सुख ऐश्वर्य के स्वामी बनें
दूध पूत धन धान्य मिले सद्बुद्धि सदज्ञान मिले।

मांग बन्दे मांग उस भगवान से
क्या मिलेगा मांग कर इंसान से
मांग बन्दे..

१. मिल गया जो जिन्दगी की राह में
सब को मत दाता समझ अज्ञान से
क्या मिलेगा..
मांग बन्दे मांग उस भगवान से

२. है वहीं सारे जमाने का पिता—२
फिर तुझे क्या खौफ है तूफान से—२
क्या मिलेगा...........................मांग बन्दे............

३. लें बना साथी सखाओं का सखा
फिर तुझे क्या खौफ है तूफान से
क्या मिलेगा.....................................मांग बन्दे

४. देख ले घर में ही बैठा है तेरे
मिल जरा इक बार उस मेहमान से
क्या मिलेगा.........................माग बन्दे..........

५. फिर कहो श्रीमान बैठाओगे कहां
भर लिया किश्ती को गएं सामान से
क्या मिलेगा.........................मांग बन्दे..................

६. तज सुपथ अज्ञान पथ पर चल दिया
हो गई गल्ती पथिक नादान से
क्या मिलेगा..........................मांग बन्दे.............

मेरा देश

इक ऐसा देश बसाएं
जहां प्रेम की बहे सुर सरी
आनन्द की हों घटाएं
सुख सम्पत्ति की वर्षा हो नित
त्याग की चलें हवाएं

घर–२ में हो हवन सुगन्धित
वेदो की हो ऋचाएं
आंगन–२ बालक खेलें
घर–२ में हो गाएं
परस्पर सारे मिलकर बैठे

ईष्या द्वेष मिटाएं
वेदामृत को पीकर विचरें
कदम्ब वृक्ष की छाएं
हो यह देश स्वर्ग के सदृश
देख के सब हर्षाएं

ध्यान (१)

लगा मन प्रभु चरणन मे ध्यान
परम पिता का सिमरण करले
जो है प्राण के प्राण
लगा...

१. उठत बैठत सोवत जागत,
राख उसी का ध्यान
प्रेम पियाला पीकर निस दिन,
कर प्रभु के गुण गान।

२. ज्ञान ध्यान की धूनि रमाले
प्रेम के तम्बू तान
विश्वासी मन परम देव से
है तेरा कल्याण।
लगा..

२

बनो प्रभु मेरे मन के हार
जीवन देते हो सब जग को,
सबके हो आधार
नित्य प्रेममय प्रियतम प्यारे
प्रेम के हो आगार
परम बंधु निज हितो सभी के
सब के हृदयाधार
हिय में बास करो जन-२ के, व्यापक सब संसार
आदि नहीं तब अंत नहीं है, सब है तब विस्तार।

भजन न्याय कारी प्रभु

जो डरते हैं प्रभु तुमसे वहीं निर्भय विचरते है
नहीं डरते हैं जो तुमसे वहीं दुनियां से डरते है

१. अतुल शक्ति उन्हें मिलती
जो करते हैं तेरी भक्ति
दुखों के सिंधु को हंसकर
वहीं जन पर करते हैं

२. तेरी पहचान होते ही
बदल जाते हैं ढंग सारे
तरंगे मन की रूक जाती
और कुविचार टरते हैं

३. मदद औरों से क्या मांगे,
स्वयं जब आप रक्षक हो
मिले आनन्द उनको ही
तेरा जो ध्यान धरते हैं

४. तुम्हारे प्यार में ऐ देव
सभी सुख सम्पदा बसती
जो करते हैं अमर होते
नहीं करते वही भरते
जो डरते हैं..

भजन

सर्वाधार

मेरा तो इस जहान मे प्रभु ही मददगार है
सच्चा पिता तो है वहीं उसी से हमको प्यार है

१. सृष्टि का कर्त्ता है वहीं
दुखों का हरता है वहीं
जो कुछ भी देखते है हम,
सबका वहीं आधार है

मेरा..

२. पाप पाखंड छोडे जो विषयो से मन को मोड़े जो
प्रभु से नाता जोड़े जो उसी का बेड़ा पार है
मेरा..

३. ढूढा इधर उधर बहुत कहीं भी प्यारा ना मिला
दिल मे टटोला जब उसे तो हो गया दीदार है
मेरा..

४. जन्म का दाता है वहीं मृत्यु भी उसका प्यारा है
समझे नहीं रहस्य जो ना करार है
मेरा..

५. होश मे आ जा जीवत
छोड़ दे अपनी टेढ़ी चाल
उसी काले तू आसरा
जिसने रचा है से संसार
मेरा......................................

आदित्यनाथ योगी
खस्ताहाल सड़क और ज
फैली गंदगी देख नाराजगी
विंध्यवासिनी का दर्शन पूजन
साढ़े 12 बजे नगर के पथरी
आयुक्त सभागार में मण्डली
बैठक शुरू की तो उन्होंने स
पीडब्ल्यूडी और नगर प
संबंधित कार्यों की पड़ताल
बाद 31 बिंदुओं पर स
मण्डलीय अफसरों की खब

उन्होंने कहा कि यह प
है किसी को दण्डित तो नहीं
दोबारा यदि इसी तरह की ग
तो अफसरों के खिलाफ क
जाएगी। कानून व्यवस्था को
ने चुस्त-दुरुस्त रखने की
खासतौर पर भदोही के
अपराधों पर नियंत्रण के
किया। सीएम आदित्यनाथ
साढ़े नौ बजे के बाद पुलि
हेलीपैड पर उतरने के बाद
से विंध्याचल पहुंचे तो पीड
नगर पालिका के अफसरों

हाल सड़क व ग

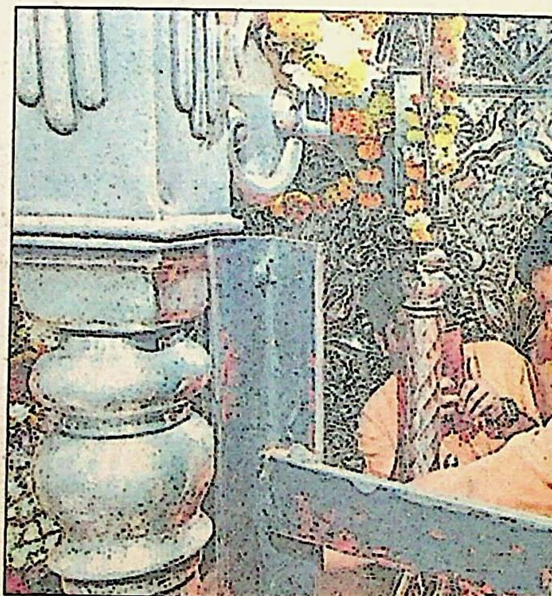
्याचल के विकास के ए योजना बनाएं

ापुर। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी विंध्यवासिनी का दर्शन पूजन के बाद डीएम विमल कुमार दुबे निर्देश दिया कि यहां के विकास के योजनाएं तैयार कराएं। इनमें ों का चौड़ीकरण, अंडरग्राउंड ीकरण, घाटों की साफ-सफाई व त, यात्रियों की सुविधा के लिए ला व पेयजल की व्यवस्था के स्ताव तैयार कर शासन को भेजें।

ापुर में गंगा की ा देख जतायी चिंता

ुर। सीएम ने गंगा की दुर्दशा र चिंता जतायी। उन्होंने जिला सभागार में जन प्रतिनिधियों व रों संग हुई बैठक में चर्चा की। ेलीकाप्टर से भ्रमण के दौरान जगह कूड़े का ढेर नजर आया। देखा कि नालों का गंदा पानी ंगा नदी में बहाया जा रहा है। हने में कोई गुरेज नहीं कि र सबसे गंदा शहर जैसा दिख इसको मिलकर रोकना होगा च्छता अभियान सफल होगा।

ल पूरा कराने का निर्देश दिया। गा को स्वच्छ बनाने के लिए ी योजना को मूर्तरूप देने का या। एसपी भदोही को निर्देश



मंडलीय समीक्षा के लिए शनिवार की सुबह मिर्जापुर पहुंचे सीएम योगी आदित्यना

सीएम ने चिकित्स

मिर्जापुर | निज संवाददाता

वेतन मान और नवीनीकरण न किए जाने की समस्या से परेशान अवनि परिधि संस्था के कर्मचारियों ने अस्पताल निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को मांगों का ज्ञापन सौंपा। कर्मचारियों की बात को सुनकर मुख्यमंत्री ने चिकित्सकों को फटकार

अस्पताल का निरी

- अस्पताल से निकलते ही वाले कर्मचारियों ने घेरा
- वेतनमान और नवीनीकरण परेशानियां सीएम को बता
- ब्लडबैंक के कर्मचारी भी